



(साहित्य कला र संस्कृति : सबैको साम्राज सम्पत्ति)

# शब्दाङ्कुर

(साहित्यप्रधान मासिक)

कार्तिक २०७९

२५३

(साहित्य कला र संस्कृति : सबैको साझा सम्पत्ति)

# शब्दाभ्युक्त

(साहित्यप्रधान मासिक)

## २०७९ कातिक (Oct-Nov 2022)

वर्ष २२ अंक १ पूर्णाङ्क २५३ (Year 22 Issue 1 Total issue 253)

सल्लाहकार : प्राचा. गोविन्दराज भट्टराई र प्राचा. जीवेन्द्रदेव गिरी

प्रधान-सम्पादक	:	धीरकुमार श्रेष्ठ
सम्पादक	:	भोगेन्द्र लिङ्गेन, गोविन्द घिमिरे, टेकेन्द्र चेम्जोड र सागर फुयाँल
कला संयोजन	:	राजेश मानस्थर
व्यवस्थापन	:	तुलसीकुमार कन्दड्वा
पैबसाइट	:	<a href="https://sabdankur.com">https://sabdankur.com</a> <a href="http://bit.ly/sabdankur">http://bit.ly/sabdankur</a>
आवरण	:	सयपत्री फूल
आवरण फोटो	:	प्रकाशचन्द्र निङ्गलेकु
ISSN	:	2773-7969

१/  
२/  
३/  
४/  
५/  
६/

### प्रतिनिधि

प्रकाशचन्द्र निङ्गलेकु, अस्ट्रेलिया prakash\_ningleku@yahoo.com; लक्ष्मीकृष्ण श्रेष्ठ, महेन्द्र बहुमुखी क्याम्पस, धरान, सुनसरी; अरुणबहादुर खत्री 'नदी' ०१-४३५३५९४, सामाखुसी साहित्य समाज, काठमाडौँ; एकल यात्री ९८४९-७३३६२८, काठमाडौँ; पेशल आचार्य, ९८४४०-४४०८३, मन्थली उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामेछाप; उमेशजड्गा रायमाथी ९८५१०-१०३६७, काठमाडौँ; प्रेम ओफा, कञ्चनजड्गा एकेडेमी, फिदिम, पाँचथर; ९८४२६०९८२३ र ९८५२६८९०२३, राजेशकुमार अर्याल, धवल पुस्तकालय, तानसेन, पाल्या, पुष्करराज भट्ट, ९८४९-२२५८८३, जयमालिका कलेज, धनगढी, कैलाली; लोकेश साउद, ९८४८-८४५८८८, दशरथ चन्द नपा, वडा नं. १ शाहीलेक, बैतडी; प्रदीप प्रधान, ९८४७०-२७२९३, ९८०४४३६९०९ पञ्चरत्न फेन्सी स्टोर्स, अमरपथ, बुटवल, रूपन्देही र मोतीबहादुर भुजेल, ९८४६०-२७२९८ र ९८५६-०३०५२५ मुनाल स्टोर्स, चिलेढुड्गा ४ पोखरा, कास्की र दीपक सुवेदी, गौरादह ४, भापा र श्रीराम राई, ९८४३७९२५५८ दोर्पा २, चिउरीडाँडा, सिर्जनाकुञ्ज, खोटाङ, कुमार काफ्ले, सिद्धिचरण पुस्तकालय, यसम, ओखलढुड्गा माधव आधिकारी, ९८४३५७९८८२, नागार्जुन कम्प्युनिकेसन, नागार्जुन ५, सीतापाइला, काठमाडौँ, काजी रोशन, ९८४७-६२९३०९, ०६८-५२०२०४, बागलुङ...

# यस अङ्कभित्र

कविता

गिद्धरहु अघाएनन् : राममणि पोखरेल ४; के भएन ? : योगेन्द्र तिमिल्सिना ६; वैश्या भनेको... : सुचन प्रधान ७; उकाली ज्यानमा : उद्घवगोपाल श्रेष्ठ ९

कथा/लकडाउन डायरी/समालोचना

भाग्य : शेखरकुमार श्रेष्ठ ११; नीतु मुकुलका तीन अनुदित लघुकथा १८; कोरोना कहरको क्रन्दन : रामदयाल राकेश २०; के छ र जिन्दगी बिताइदिन्छु : युवराज मैनाली २२ र नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका कुलपति गड्गाप्रसाद उप्रेती र सदस्य सचिव प्रा. जगत्प्रसाद उपाध्याय प्रेक्षित'बाट २०७९ असोज २० गते जारी गरिएको प्रेस विज्ञप्ति ३७ ।

पत्रिकाको ठेगाना

sabdankur@gmail.com/sabdankur58@yahoo.com

काठमाडौं, नेपाल मोबाइल नं. ९८४९-३६२०३२

वितरक : साहित्यिक पुस्तक पत्र पत्रिका सप्लायर्स

चावहिल, काठमाडौं ०१-४४९७३५५९/९८४९-९४४९६६७/९८४९-७२९६७६

## विशिष्ट सदस्य

**स्वदेश :** सीता सापकोटा (काठमाडौं), इन्दिरा चापागाई (सङ्खुवासभा) र रामबाबु नेपाल (पाल्पा)

**विदेश :** प्रकाशचन्द्र निझलेकु (अस्ट्रेलिया)

## आजीवन सदस्यहरू

**स्वदेश :** नर्मदेश्वरी सत्याल (सङ्खुवासभा), प्रा.डा. गोविन्दराज भट्टराई (पाँचथर), भोगेन्द्र लिख्देन (झापा), धीरकुमार श्रेष्ठ (सप्तरी), गोविन्द धिमिरे (सिन्धुपाल्चोक), राजेशकुमार लिम्बु (तेह्रथुम), समीर शाह (दाढ), सुभाषचन्द्र भण्डारी (कैलाली), हरिप्रसाद भण्डारी (गुल्मी), डा. रामप्रसाद ज्वाली (गुल्मी), रामदेव पाण्डे (अर्धाखाँची), देवीप्रसाद नेपाल (झापा), विश्वराम सिंदेल (काभ्रेपलाञ्चोक), छविरमण सिलवाल (काभ्रेपलाञ्चोक), प्रा.डा. कुमारप्रसाद कोइराला (ओखलढुङ्गा), नन्दलाल आचार्य (उदयपुर), अनन्त वाले (काभ्रेपलाञ्चोक), लक्ष्मीकृष्ण श्रेष्ठ (धनकुटा), ध्रुव नेपाल (पाल्पा), मुकुद्द पोखरेल (भक्तपुर), नारायणप्रसाद रिमाल (पर्वत), मदनबहादुर पाठक (सर्लाही), अमरकुमार प्रधान (दोलखा), रामविक्रम थापा (खोटाड), जी.के.एन. खडेरी (ललितपुर), मणिराज सिंह (महोत्तरी), अनिल श्रेष्ठ (तनहुँ), रामकृष्ण दुवाल (काठमाडौं), इन्द्रकुमार श्रेष्ठ (ओखलढुङ्गा), मोतीबहादुर भुजेल (कास्की), प्रेमराज लुइँठेल (स्याङ्जा), सगुन श्रेष्ठ (दोलखा), डा. तुलसीप्रसाद भट्टराई (तालेजुड), निरञ्जन रिजाल (धादिङ), अनिलचन्द्रश्रेष्ठ (दोलखा), डिल्लीराम राई (खोटाड), प्रा.डा. जी.वेन्द्रेव गिरी (सुखेत), टेक्नर चेम्जोड (झापा), हरि गौतम (पाँचथर), अविनाश श्रेष्ठ (आशाम, भारत), केशव भट्टराई (मोरड), विन्दु दाहाल 'मुकदर्शक' (झापा), विष्णु न्यौपाने (झापा), नरपति पाण्डे (झापा), लेखनाथ न्यौपाने (झापा), दीपक सुवेदी (झापा), टड्कबहादुर आलेमगर (उदयपुर), मधुर भट्टराई (महोत्तरी), यादव भट्टराई (पाल्पा), घनबहादुर, कुमार काफ्ले (ओखलढुङ्गा), दिव्य गिरी (ललितपुर), सुरेश काफ्ले 'बिदारक' (सुनसरी), निरञ्जन त्रिपाठी (काठमाडौं), अवणकुमार दुङ्गाना (रुपन्देही), प्रा.डा. कृष्णप्रसाद धिमिरे (अर्धाखाँची), सागर फुयौल (काठमाडौं), कृष्ण प्रधान (पाँचथर), दीन पन्थी (गुल्मी), शेखरकुमार श्रेष्ठ (काठमाडौं), वासु पन्थी (दाढ), हेमन्तराज दुलाल (भापा) नितेश सापकोटा (सिरहा), छायादत्त न्यौपाने (पर्वत) तेजप्रकाश श्रेष्ठ (काठमाडौं), प्रा.डा. भीम खतिवडा (सुनसरी), शर्मिला खडका दाहाल (सुनसरी), डा. हरिप्रसाद सिलवाल (धादिङ), विजय चालिसे (काठमाडौं), दीपक श्रेष्ठ (भापा), कमलीकान्त भेटवाल (सङ्खुवासभा), उद्घवगोपाल श्रेष्ठ (काठमाडौं)...

**विदेश :** कृष्ण बजगाई (बेलायत), सुवास निझलेकु (अस्ट्रेलिया), सुशीला निझलेकु (अस्ट्रेलिया) प्रेमबहादुर कट्वाल (कुवेत)

## ଛାଗ୍ରୀ ଅଧିଗ୍ରହତ

ଶବ୍ଦାଙ୍କକୁ ପ୍ରକାଶନଲେ ଯସେ ଅଙ୍କଦେଖି ୨୧ ଵର୍ଷ ପୂରା ଗରେ ବାଇସ୍‌ମ୍ଯାର୍ ବର୍ଷମା ପ୍ରଵେଶ ଗରେକେ ଛ । ଯେ ଅବଧିମା ହାମୀଲେ ଯୋ ଅଙ୍କକୋ ପ୍ରକାଶନସାଙ୍ଗେ ୨୫୩ ଅଙ୍କକୋ ପ୍ରକାଶନ ଗରିସକେକା ଛାଁ । ଯୋ ସୁଖଦ ସମାଚାର ଯହାଁହରୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଶୁଭେଚ୍ଛୁକସମକ୍ଷ ସମ୍ପ୍ରେଷଣ ଗର୍ନ ପାଉଁଦା ହାମୀଲାଈ ଗର୍ବ ର ଖୁସି ଦୁଇଁ ଏକ ସାଥ ମହସୁସ ଭଇରହେକୋ ଛ । ଗର୍ବ ର ଖୁସି ଯସକାରଣ କି; ହାମୀଲେ ୨୦୫୮ ସାଲକେ କାତିକ ମହିନାଦେଖି ଯସକୋ ପ୍ରକାଶନ ପ୍ରାରମ୍ଭ ଗର୍ଦା ଯସକୋ ଆକାର ଏକପାନେ ମାତ୍ର ଥିଯୋ । ପ୍ରାରମ୍ଭମା ହାମୀଲେ ହାମ୍ରୋ ସାମର୍ଥ୍ୟଅନୁକୂଳ ଯସକୋ ପ୍ରକାଶନକୋ ପାଇଲା ଉଚାଲେକା ଥିଯୀଁ । ଉତି ବେଳା ହାମ୍ରା ଅଗାଡ଼ି ପ୍ରଶନହରୁକୋ ପହାଡ଼ ନେ ଉଭିଏକୋ ଥିଯୋ । ଥୁପୈ ପ୍ରଶନହରୁକା ମାଭବାଟ ଭେ ପନି ଉତି ବେଳା ପ୍ରକାଶନ ପ୍ରାରମ୍ଭ ଗରିଏକୋ ସମ୍ପନ୍ନା ଯତି ବେଳା ଭଲଭଲୀ ଆଇରହେଛ । ଯସ୍ତା ପ୍ରଶନହରୁମା, ଏକପାନେ ପନି ପତ୍ରିକା ହୁନ୍ଛ ର ? ସାହିତ୍ୟିକ ପତ୍ରିକା ପନି ପ୍ରକାଶନ ଗର୍ନ ସମ୍ଭବ ଛ ର ? ଯସକୋ ପ୍ରକାଶନବାଟ କତି ଫାଇଦା ହୁନ୍ଛ ? ନାଫା ହୁନ୍ଛ ? ଘାଟା ହୁନେ ବ୍ୟଵସାୟମା କିନ ହାତ ହାଲେକୋ ? ନଦୁଖେକୋ ଟାଉକୋ କିନ ଡୋରୀ ଲଗାଏର ଦୁଖାଏକୋ ? ବହୁଲାଉନ ନେ ରହର ଲାଗେକୋ ହୋ ଭନେ ଅରୁ ନୈ ଥୋକ ଗର୍ଦା ପନି ତ ହୁନ୍ଥ୍ୟୋ ! ଯୀ ର ଯସ୍ତା ପ୍ରଶନହରୁଲାଈ ହାମୀଲେ ପ୍ରଶନକୈ ରୂପମା ସସମ୍ମାନ ରହନ ଦିଯୀଁ । ବଦଳାମା ପ୍ରକାଶନଲାଈ ନିରନ୍ତରତା ଦିନମା ହାମ୍ରୋ ଧ୍ୟାନଲାଈ କେନ୍ଦ୍ରିତ ଗନ୍ୟୀ । ପ୍ରଶନହରୁଲାଈ ହାମୀଲେ ଭବିଷ୍ୟକା ସମ୍ଭାବିତ ଉତ୍ତର ହୁନ ସକଞ୍ଚ ଭନ୍ନେ କୁରୋଲାଈ ଭନେ ବିର୍ତ୍ତନ୍ତିନ୍ତି । ହାମୀଲେ ହାସିଲ ଗର୍ନୁପର୍ନ ଲକ୍ଷ୍ୟହରୁ ଯିନେ ପ୍ରଶନଭିତ୍ର ଲୁକେର ରହେକା ଛନ୍ ର ତିନଲାଈ ବେଳା ବେଲାମା ଖୋଜ ସକଞ୍ଚ ଭନେର ଉତ୍ତରକେ ଖୋଜି ଗର୍ନେ ପ୍ରୟତନ ଭନେ ଜାରି ରାଖ୍ୟୀ । ଫଲତା: ସମ୍ୟକମମା ହାମୀଲେ ପୃଷ୍ଠବୃଦ୍ଧିକା ସାଥୀ ଯସକୋ ସ୍ତରୀୟତାଲାଈ ଧ୍ୟାନ ଦିଇରହ୍ୟୀ । ସାଥୀ ସ୍ତରୀୟତାକୋ ଜାଁତୋମା ପିସିଏର ନଵପ୍ରତିଭାହରୁଲେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ନହୁନ୍ଦୈ ଅନ୍ତ୍ୟକୋ ଦୁଃଖଦ ଅଵସାନ ବେହୋର୍ନ୍ତ ନପରୋସ୍ ଭନ୍ନେମା ପନି ସୂକ୍ଷମତାପୂର୍ବକ ଧ୍ୟାନ ଦିଇରହ୍ୟୀ । ଯସେକୋ ପ୍ରତିଫଳ ହୁନୁପର୍ଛ, ଆଜକା ଦିନସମ୍ମ ଆଇପୁର୍ଦ୍ଵା ହାମୀଲେ ପୃଷ୍ଠ ବୃଦ୍ଧି ଗର୍ଦି ଏକପାନେବାଟ ବାଉନ୍ନ ପୃଷ୍ଠସମକୋ ଵିସ୍ତାର ପ୍ରାପ୍ତ ଗର୍ନ ସକର୍ଯୀ ଭନେ ଥୁପୈ ସ୍ଥାପିତ ସର୍ଜକଳାଈ ସସମ୍ମାନ ସ୍ଥାନ ଦିଏର ପନି ନଵସର୍ଜକଳାଈ ଅଗାଡ଼ି ବଢନ ର ସ୍ଥାପିତ ହୁନ ଆଧାରଭୂମି ପ୍ରଦାନ ଗର୍ନ ସକର୍ଯୀ । ହାମୀଲାଈ ଯସ୍ତା ଲାଗିରହେକୋ ଯୋ ଅନୁଭୂତିକୋ ଵାସତିକ ନ୍ୟାୟାଧୀଶ ଭନେ ଯହାଁ ଶୁଭେଚ୍ଛୁକହରୁ ନେ ହୁନୁହୁନ୍ଛ । ଯହାଁହରୁକୋ ସାଥ ର ସହ୍ୟୋଗ ନହୁନ୍ଦେ ହୋ ତ ଧେଇ ସମ୍ଭବ ଥିଯୋ, ହାମ୍ରୋ ଯାତ୍ରା ଯହାଁହାସମ୍ମ ଅଵଶ୍ୟମେଵ ଆଇପୁର୍ବନେ ଥିଏନ । ବିଚମୈ କତୈ ଅକାଲ ବିଶ୍ରାମ ବେହୋର୍ନ ବାଧ୍ୟ ହୁନେ ଥିଯୋ । ଯସକା ଲାଗି ଯହାଁ ଶୁଭେଚ୍ଛୁକହରୁ ନେ ହକଦାର ହୁନୁହୁନ୍ଛ । ଯସର୍ଥ ଯହାଁହରୁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣପ୍ରତି ହଦ୍ୟତ: କୃତଜ୍ଞତା ବ୍ୟକ୍ତ ଗର୍ଦାଇଁ । ଶୁଭେଚ୍ଛୁକହରୁ ଅର୍ଥାତ୍ ସର୍ଜକ, ଗ୍ରାଫିକ ଡିଜାଇନର, ମୁଦ୍ରକ, ବିତରକ, ବିକ୍ରେତା, ପାଠକ, ବିଶିଷ୍ଟ ତଥା ଆଜୀବନ ସଦସ୍ୟକା ସାଥୀ ଅରୁ ଅରୁ ପନି । ଯସକା ସାଥୀ ବେଳା ବେଳା ବାଟୋ ବିରାତଲା କି ଭନୀ ଖବରଦାରୀ ଗର୍ନ ଟିପ୍ପଣୀକର୍ତ୍ତା ର ସମାଲୋଚକକୋ ଯୋଗଦାନ ପନି ଉତିକେ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଛ । ତପାଈଁ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣପ୍ରତି ହାର୍ଦିକ ଏବମ୍ ବିନମ୍ର ନମନ ପ୍ରକଟ ଗର୍ଦାଇଁ । ହାମ୍ରା ଅଗାଡ଼ି ଵିସ୍ତାରିତ ହାମ୍ରୋ ଭବିଷ୍ୟକା ଦିନମା ପନି ଯହାଁହରୁକୋ ଯସ୍ତା ରଚନାତମକ ର ସିର୍ଜନାତମକ ସାଥ ର ସମର୍ଥନ ଯଥାବତ୍ କାଯମ ରହେ ଛ ଭନ୍ନେମା ହାମୀ ପୂର୍ଣ୍ଣତ: ବିଶ୍ଵସତ ଛାଁ । ଯହାଁହରୁକୋ ମାର୍ଗଦର୍ଶନକା ଲାଗି ହାମୀ ସଦା ପ୍ରତିକିତ ରହେ ଛାଁ । ଯୋ ନେ ହାମୀଲାଈ ଅଗାଡ଼ି ବଢନେ ସମ୍ବଲ ହୁନେ ଛ । ଯସେକା ସହାରାମା ହାମୀଲେ ବାଁକି ଯାତ୍ରାଲାଈ ବିନା କୁନୈ କଠିନାଇ ସହଜତାପୂର୍ବକ ପୂରା ଗର୍ନେ ଛାଁ । ଯୋ ହାମ୍ରା ଦୃଢ଼ ବିଶ୍ଵାସ ହୋ ।

- ପ୍ରଧାନ ସମ୍ପାଦକ

## गिद्धहरू अधाएन्

राममणि पोखरेल

गिद्धहरू लहर लागेर  
आफ्ना पखेटा  
भ्याट भ्याट भ्याट पार्दै  
आफ्नै रैती दुनियाँका लास  
दुडिरहेछन् ।

पेटभरि खान नपाएर  
आफ्ना सन्तान पाल्न नसकी  
बिदेसिएको लोगनेले  
समयमा पत्र नपठाएपछि  
देवकी मण्डलले काखको  
नानी चेपेर, सप्तकोसीमा  
हाम फालेको साँझ  
मेरा आँखाअगाडि नाचिरहयो ।

उनका प्रियजन र गाउँलेले  
उनलाई तातो माया  
दिनुको साटो उपेक्षा गरे,

फातिमा खातुनले  
आफ्ना सन्तानसहित  
गाउँको सिरानको  
वरपिलको चौतारीमा  
उभिएर विषा सेवन गर्दै  
जीवनलीला समाप्त  
गरेको खबर ।

अखबारमा छापिएको छ  
भँगेरे अक्षरमा  
अखबारका पानामा, धेरै मान्छेका  
आँखा परे  
फातिमा खातुनको  
मृत शरीर  
चौतारामा लम्पसार थियो  
विषको सेवनले

आमाको प्राणपखेर  
समाप्त भएको, मेलो नपाएर  
उनको पाँच वर्षको  
अबोध छोरो  
आमाको लासको सिरानी बनाएर  
रोइरहेको दृश्यले  
गाउँले र छरछिमेकी  
शोकाकुल देखिन्थे  
मानव जाति कति निकृष्ट  
स्वार्थी छ भन्ने सङ्केत  
यस्तै दृश्यले जानकारी दिन्थे  
हामीलाई जानकारी छ  
तिनै समाजका अगुवा  
कानुन निर्माता भनिएका  
राष्ट्रका संरक्षक ठानिएका  
गिद्धहरूको रूप  
धारण गरेका  
निर्दयी क्रूर स्वार्थीहरू  
निरीह जनताको  
भाग खोसेर  
नीति निर्माणलाई पन्छाउँदै  
विधेयक पासको नामै नलिई  
निरन्तर राष्ट्रको ढिकुटीमा  
रजाइँ गरिरहेछन्  
अविवेकी र स्वार्थी रूप धारण गर्दै  
जनताको शोषण गर्दै छन्  
संसद्को पाडो या गिद्ध कहिल्यै  
अघाउँदैन भन्ने सन्देश  
प्रवाह गर्दै, हिँडिरहेछन्  
उठ ए,  
सिमान्तकृत र पीडितहरू हो,  
समानताका लागि  
संसद्को गिद्धहरूमाथि आक्रमण गर्न  
जसको कहिल्यै नभरिने  
ठुलो पेटमा छर्चा हान्न अघि बढ ।

(raibiju1@gmail.com)

## के भएन ?

योगेन्द्र तिमिल्सिना



यो भएन, ऊ भएन, त्यो भएन,  
भएन त भएन !  
जनआन्दोलन भयो हजारौं मानिस मरे  
मरे त मरे, बँचेकालाई के भो ?  
पुरानो सत्ता ढल्यो, नयाँ आयो  
आयो त आयो, आएर के भो ?  
कालीकोटमा औषधी पुग्यो ?  
बाजुरामा चामल पुग्यो ?  
हुम्लामा बाटो पुग्यो ?  
तराइमा मल पुग्यो ?  
काठमाडौंमा ढल पुग्यो ?  
धनीलाई धन पुग्यो ?  
गरिबी शून्यमा पुग्यो ?  
भ्रष्टाचार निर्मूल भइसक्यो ?  
हुन त धेरै थोक भयो,  
पहिले एउटा मुख थियो  
अब हजार मुख भए  
पहिले एक सरकार थियो,  
अहिले अनेकौं सरकार भए  
भए त भए, भएर के भो ?  
पहिले एकसय खर्च हुन्थ्यो  
अहिले एक लाख चाहिन्छ ।  
पहिले दशओटा कार थिए,  
अहिले एक हजार चिल्ला कार छन्  
पहिले जागिर खान पद्नुपर्छ भन्थे सबैले  
अहिले धन कमाउन नपढे पनि हुन्छ  
पदमा बस्न कोटामा पर्नुपर्छ ।  
कोटामा नपर्नेले अहिले पश्चात्तापले रुनुपरेको छ ।  
त्यही भयो जो नहुनुपर्ने थियो ।  
हो विकास भनेको त्यही हो ।

(ytimilsina2@gmail.com)

## तेश्या भनेको.

सुचन प्रधान  
(गान्तोक, सिक्किम, भारत)



प्रत्येक वसन्तमा  
नाड्गिंदै फुल्ने  
फलदोको रखजस्तै  
हरेक रात नाड्गिंदै फुल्ने  
अर्को रख हो वेश्या ।

अथवा  
हिउँदका सम्पूर्ण ठिहीहरु  
समाहित गरेर  
गुराँसजस्तै रातै लुकी लुकी  
परिचय लुकाएर फूल्ने  
अर्को फूल हो वेश्या ।

आफ्नो सर्वाङ्ग शरीर  
आफ्नै सन्तानलाई आत्मदाह गरेर  
आफ्नै छोराछोरीको निस्ति  
ब्रेकफास्ट बनिदिएर  
माकुराजस्तै बाँच्नु नै  
वेश्या हुनु हो ।

वेश्या भनेको  
बर्खाको भेल हो  
जसले नदीभित्र पलाएको  
विकृतिको लेउहरु  
पखाल्दै लान्छ ।

वेश्या भनेको  
नेता हो  
कवि हो  
पत्रकार हो  
ठेकेदार हो

अभियन्ता हो  
यिनीहरू सबै मोक्ष खोज्दै  
वेश्याकोमा नै पुग्छन् ।

वेश्या भनेको त  
आमा पनि हुन्  
श्रीमती पनि हुन्

वेश्या भनेको  
वैराग्य हो  
योगी हो  
वेश्याकै योनीबाट छिरेर नै  
उसले वैराग्य प्राप्त गर्दछ ।

वेश्या भनेको  
समाजले बोन्साइ गरेर  
फुलाएको फूल हो ।

ओछ्यानमा चल्ले  
देवतामा नचल्ले फूल हो वेश्या ।

वेश्या भनेको  
सिद्धार्थ गौतमलाई खिर खुवाएर  
बुद्धत्व बनाउने सुजाता हुन् ।  
वेश्या भनेको  
येसुलाई तिर्खाको पानी पिलाउने  
सामरी स्त्री हुन् ।

वेश्या भनेको  
आकाशको एकलो जुन हो  
अध्याँरोमा प्रकाश बन्ने  
अध्याँरोमा उदाउने ।

### आगामी आकर्षण

पेशल आचार्य, इन्द्रकुमार श्रेष्ठ, चन्द्रबहादुर लामा, वसन्त अनुभव, मधुर  
भट्टराई, जेबी खत्री, दीपक श्रेष्ठ, रामकुमार पण्डित क्षेत्री, सूर्य चापागाई, महेश  
प्रसाई आदि ।

## उकाली ज्यानमा

उद्धवगोपाल श्रेष्ठ  
(रङ्गेली, सिक्किम, भारत)



पहाडको फेदबाट त हो नि  
छोडेन !

उकालो लाग्ने बाटो;  
पाइला चाल्ने जमकॉलाई  
काखजस्तो उनै त हुन्  
फाटक भइदिने ।

उकाली ज्यानमा  
धेरै कुरा सासको भरले  
बोक्नुपर्छ छोडेन !  
मनको उडान भरेपछि  
थकानको इतिहास भुल्नुपर्छ,  
आँखा उचाल्नेबित्तिकै  
निधारमाथि  
निलाम्य आकाशको  
दुर्बोध्य रङ्ग  
उनैको क्यानभास हो  
छोडेन !  
जीवनलाई शब्दहरूको चित्र भइदिने ।

उकाली ज्यानमा  
रुखहरू हामीलाई जिस्क्याउँदै ओर्लन्छ  
सर्पिल गोरेटो घस्तिंदै  
कुइनेटो काटिदिन्छ

जङ्गलको लय बोकेर  
आफ्नै गीत सुसेल्दै  
खोला तर्को तर्को उँधो फर्कन्छ  
छोडेन !  
एक फाँको धैङ्गु,  
एक पित्को ठोट्नेको अचार,

र, एक पोटे लसुनको  
स्वाद चाख्दै बिसाएको  
र,  
उनैको चौतारीमा त हो नि !  
देउराली भाकेर  
यो जुनीको माया साटेको ।  
(फाटक- सिकिम-दार्जिलिङ्गमा बाटाहरूको चोकलाई भनिन्छ; धेडु- सिकिममेली भोटिया  
भाषामा चामलको मुरै/भुजा)

### शब्दाङ्कुर कथा प्रतियोगितासम्बन्धी सूचना

शब्दाङ्कुर साहित्यप्रधान मासिक प्रकाशनको २१ वर्ष पूरा भई २२ वर्षमा प्रवेश गरेको  
उपलक्ष्यमा प्रतियोगितात्मक कथा प्रतियोगिताको आयोजना गरिएको हुँदा निम्नलिखित  
प्रावधानहरू पूरा गरी भाग लिनुहुन सम्पूर्ण कथाकारमा हार्दिक अनुरोध गर्दछौं ।  
प्रतियोगितामा प्रथम, द्वितीय र तृतीय हुने कथालाई प्रमाणपत्रसहित निम्नअनुसार  
पुरस्कृत गरिने छ :

प्रथम पुरस्कार : नगद रु दश हजार

द्वितीय पुरस्कार : नगद रु छ हजार

तृतीय पुरस्कार : नगद रु पाँच हजार

१. कथा नेपाली भाषामा लेखिएको मौलिक हुनुपर्ने छ ।
२. कथा अन्यत्र अप्रकाशित हुनुपर्ने छ । प्रकाशित कथा भुलवश पुरस्कृत भए  
प्रतियोगितामा समावेश गरिने छैन ।
३. कथा तीन हजार शब्दमा नबढाई लेखिएको हुनुपर्ने छ ।
४. कथा प्रिती फन्टमा टाइप गरेर इमेलमार्फत पठाउनुपर्ने छ ।
५. कथाको सिरानमा कथा प्रतियोगिताका लागि भनी लेखिएको हुनुपर्ने छ ।
६. कथाकारको सङ्क्षिप्त परिचय पठाउनुपर्ने छ ।
७. कथाकारको डिजिटल फोटो पनि पठाउनुपर्ने छ ।
८. उत्कृष्ट कथाहरूलाई शब्दाङ्कुरमा प्रकाशन गरिने छ ।
९. कथा प्रतियोगितासम्बन्धी निर्णय गर्ने अधिकार शब्दाङ्कुरमा निहित रहने छ ।
१०. कथा पठाउनुपर्ने समयसीमा : २०७९ पुस मसान्तसम्म
११. कथा पठाउने इमेल ठेगाना : [sabdankur@mail.com](mailto:sabdankur@mail.com)

## भारत

शेखरकुमार श्रेष्ठ  
(दक्षिणकाली, फर्पिङ, सोखेल, काठमाडौं)



'गुरुबा ! हाम्रो यो जीवनमा अति धेरै सङ्कट आयो । मेरो र यिनको जन्मकुण्डली हेरेर भविष्य बताइदिनुपन्यो । हाम्रो उन्नति र प्रगतिमा कतै केहीको साया पो छ कि ? हाम्रा लागि कतै कुनै ग्रह बाधा बनेर बसेको पो छ कि ?' किशोरले कहिले पत्ती त कहिले ज्योतिष केशव पौडेललाई हेर्दै सोधे ।

'हो, गुरुबा हाम्रो विवाह भएको तीन वर्ष पूरा भई चार वर्ष लागिसकेको छ । अहिलैसम्म दिनहुँ जोतिएर काम गर्दा पनि दिनको दुई छाक खानुभन्दा बाहेक अरु केही उपार्जनको काम गर्न सकिएन । कतै ग्रहदोष वा बिघ्नबाधा पो छ कि । ग्रहदोष हो भने शान्त गरिदिनुपन्यो ।' शान्तिले पनि भनिन् ।

शान्तिले एक माना चामल प्लास्टिकबाट झिकेर ज्योतिष केशवका अगाडि रहेको पित्तलको थालीमा खन्याइदिइन् । किशोरले कालो पर्सबाट दुई सय झिकेर राखिदिए ।

'एउटा सिक्का छैन, तपाईंसँग ?' शान्तिले पति किशोरलाई सोधिन् ।

'भयो, यहाँ छ ।' ज्योतिष केशवले भने । उनले काठको चुकुल फुक्लेको बाकस खोले । एउटा चक्कु झिके । बाकसबाट तामाको तर अक्षर मेटिन लागेको सिक्का झिके । उनले त्यो सिक्कालाई किशोर र शान्तिको निधारमा ढोगाएर पूर्वतिरको कोणमा राखे । बाकसबाट रस्ताको माला झिके । त्यसलाई पहिले बुझिने र पछि नबुझिने स्वरमा भट्भटाए अनि ढोगेर गलामा लगाए । पित्तलमा भएको चामललाई नौ समूहमा बाँडे । शान्तिको हातमा भएको जन्मकुण्डली हातमा लिए र भने,

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा करिचद दुःख भाग्भवेत् ।

ज्योतिषीले शान्ति र किशोरको जन्मकुण्डली खोली सिक्काले पढ्न मिल्ने गरी थिचिराख्ये । 'अँ, एउटाको राशि कुम्भ र अर्कोको राशि मेष रहेछ । दुवैको विवाहको योग राशि नै रहेछ । दाम्पत्य जीवन पनि सुखी नै हुनुपर्छ । एकले अर्कोलाई सम्मान गर्नन् । एकले अर्कोको कामलाई हृदयदेखि स्वीकार गर्नन् । उमेर पनि पाँच वर्षको मात्र अन्तर रहेछ । एक जना ३२ को हुनुभएछ । अर्को २७ वर्षको हुनुहुँदो रहेछ । जन्मकुण्डलीअनुसार संबै ग्रह पनि ठिकै छ । प्रगति पनि हुनुपर्छ । आर्थिक पक्ष पनि विगत दुई वर्षदेखि राम्रो नै भएर आउनुपर्न योग छ । परिवारमा दुइटा सन्तान हुनुपर्छ । दुवै भाबुक हुनुपर्छ ।' ज्योतिषीले खर्च भने । 'हो गुरु, हाम्री एउटी छोरी छ ।' शान्तिले भनिन् ।

'शान्तिको कुण्डलीअनुसार त बृहस्पति ग्रह राम्रो स्थानमा छ । मङ्गलले सहयोग गरी धनको वर्षा हुनुपर्न छ । नातागोता इष्टमित्रको प्रभाव पनि घरमा रहनुपर्छ । त्यति मात्र होइन केही जग्गा आउने र घर बनाउनुपर्न योग छ । जन्मकुण्डलीअनुसार कुनै खराब हुन नपर्न देखिन्छ । जन्म लगनअनुसार भाग्यरेखामा मनोमालिन्य देखिँदैन ।' ज्यातिषीले यसपटक

पनि पाठ पढेजस्तै भने ।

'हजुर त्यसो भनुहुन्छ तर भएको जग्गा नै विक्री भइसक्यो स्वास्थ्य र खानाका लागि । शान्तिले लामो श्वास लिएर दायाँपट्टीको कपाल कन्याउँदै भनिन् ।

'हो, गुरु अब के गर्न होला ? अब केही समय यही क्रम रहने हो भने त जीवन जिउन पनि कठिनसाध्य हुन्छ । किशोरले आउ तन्काउँदै भने ।

'अब यहाँ दुवै पतिपत्नी मिलेर देवीको सेवा गर्नुहोस् । ग्रह जति राम्रा भएपछि त ग्रहफल राम्रै हुनुपर्ने हो । त्यसैले यसको उपाय भनेको ईश्वर सेवा र भक्ति नै हो । अब एकबाजि तनमन लगाएर शनिवार निराहार रही देवीको पाठपूजा गर्नुहोस् । देवीको मन्दिरमा गएर उनकै सेवा गर्नुहोस् ।' ज्योतिषीले सुझाव बताए ।

ज्योतिषी गुरुको आज्ञा मानी किशोर र शान्ति दुवैले शनिवारका दिन व्रतको सङ्कल्प गरे । उनीहरूले देवीको सेवा र आराधनालाई शनिवारको दिन छुट्याए ।

शनिवारको दिन किशोरका दुवै जोईपोइ बिहान पाँच बजे ओछ्यानबाट कर दर्शन गरी उठ्ये :

कराग्रे वसती लक्ष्मी करमध्य सरस्वती

करमूले स्थितां गौरी शुभप्रभातं कर दर्शनम् ।

कर दर्शनपछि ओछ्यानबाट पाउ पनि नओराली धर्तीको दर्शन गर्थे । नुहाइधुवाई गर्थे । नुहाइपछि एक थुँगा सेतो फुल राखी ॐ आदित्याय नमः भन्दै तामाको कलशमा भएको जल पूर्वतिर उदाएको सूर्यलाई अर्पण गर्थे, कुलदेवताको नाम सम्झी अर्पण गर्थे र अन्त्यमा पितृको नाममा जल विसर्जन गर्थे ।

त्यसपछि घल्चामा जल बोकेर आई पूजाकोठामा छिर्थे । पूजाकोठामा देवीको प्रतिमा थियो । उनीहरू प्राण प्रतिष्ठित त्यस प्रतिमाको पूजाआजा गर्थे । एक जनाले देवी स्तुति पाठ गर्थे र अर्काले सुन्थे । घरको पूजा सकिएपछि दुवै जना देवीका मन्दिर कहिले दक्षिणकाली, कहिले शोभाभगवती, कहिले भद्रकाली छिर्थे । हरेक शनिवार दिउँसो मध्याह्नकाल पारेर जल आचमन गरी फेरि सूर्यलाई जलार्पण गर्थे । दिउँसो काँडापानी खान्थे । बेलुकाका लागि फलाहार रोटी पकाउँथे । साँझको समयमा पुनः सूर्यलाई जलार्पण गरी पूजाकोठामा पसेर आरती सक्थे । बेलुका कोही आइपुगे भने प्रसाद बाँडी आहार ग्रहण गर्थे । त्यस रात उनीहरू ओछ्यान अलग गरी सुन्थे । भोलिपल्ट बिहान एकले अर्कोसँग नबोली नुहाइधुवाई सकेर पूजा गर्थे । त्यस दिनबाट भने शनिवार नआउन्जेल पहिलेको जस्तो सामान्य भोजन ग्रहण गर्थे ।

किशोर र शान्तिले हरेक शनिवार व्रतमा तन, मन र ध्यान लगाए । उनीहरू फुर्सदको समयमा सप्ताह र गुरु प्रवचन सुन्न जान्थे । ब्राह्मण, साधु, सन्त, महन्तको उपदेश श्रवण गरी कान पवित्र पार्थे । कसैलाई तितो वचन बोल्दैन्थे । व्रतको प्रभाव हो या दैवीय शक्तिले गर्दा कालो मुहार कहिल्यै लगाउन परेन । बरु श्रीमान् श्रीमती दुवै व्रत बसेको थाहा पाएर बेला बेलामा नातासम्बन्धी र छरछिमेकले कहिले थिउ त कहिले गोरस ल्याएर दिन्थे । व्रत बसेको बाह्य हप्ता बित्यो । बाह्य हप्ताको शनिवार राति सुतेपछि शान्तिले मन्दिर गएर दीप प्रज्वलन गरेकी सपना देखी । किशोरले पनि पहाडमाथि रहेको कालो बादल फाटेर सूर्योदय हुँदै गरेको सपना त्यस रात देखे ।

भोलिपल्ट उठी दुवैले नियमित नुहाइधुहाइ सके । श्रीमान् श्रीमती दुवैको मुखाकृतिमा चमक थियो । भौतिक वस्तुको अभावले सताए पनि आत्मिक शान्ति प्राप्त गर्न थालेका थिए । सपनाको कुरा बताउँदा फलमा प्रभाव पर्छ भनी एकले अर्कालाई बताएनन् । उनीहरू अब आफ्नो जीवनमा वसन्त आउने आशामा रम्न थाले ।

एक दिन शान्ति गाउँमा घुम्न गएकी थिइन् । बाटोमा काकी नाता पर्नेसँग भेट भयो । काकीले भनिन्, 'शान्ति, पर्सि घरमा छोराको व्रतबन्ध छ । धेरै घरमा निम्तो पठाएकी छैन । हुन त भरे काका जान्छु भन्दै हुनुहन्थ्यो तापनि बिर्सनुभयो भने यसैलाई निम्तो मानेर आए है ।' 'काकी, शनिवार त व्रत छ । हामी दुवै आउन सकदैनाँ । त्यसको अधिल्लो दिन शुक्रवार नै आएर भेटछु है ।' शान्तिले काकीलाई सुनाइन् ।

'ठिकै छ । आउनचाहिँ एकबाजि आऊ ल ।' काकीले भन्नुभयो ।

त्यसको केही दिनपछि किशोर पनि बाहिर निस्केको थियो । किशोरको साथीले भन्यो, ' किशोर पर्सि शनिवार दक्षिणकाली मन्दिरमा पिकनिकको कार्यक्रम छ । उमा, ब्रजेश, विनय, शिला जान्छन् अनि हाम्रो अमेरिकामा बस्ने साथी तोयानाथ र कृष्ण पनि जान्छन् । प्रतिव्यक्ति पाँच सय उठाएका छैं । तै अहिलेसम्म पिकनिकमा छुटेको छैनस् । योपटक रेसमाले पैसा उठाएकी छ ल ।'

किशोरले भन्यो, 'मित्र, शनिवार त व्रत छ । दक्षिणकालीको मन्दिर त ठिक छ तर त्यस दिन बाहिर खाने गरेको छैन । त्यसैले यसपटक म जाँदिनँ ल । मौका मिले अर्कापल्ट जाउँला ।' यसै गरी दुवै श्रीमान् श्रीमतीले परिआएको र गर्नेपर्न हरेक शनिवारका काम पन्छाउँदै देवीमा नै त्यो दिन समर्पण गरेर बसे ।

किशोर गाउँमा बस्थ्यो । गाउँ भनेको उसको गाउँ गाउँ नै पनि होइन । सहरी प्रभावले पूरा छोएको गाउँचाहिँ हो । गाउँमा उसको दुई रोपनी खेत थियो । बारीचाहिँ घरसहितको एक रोपनी थियो । त्यहाँ खेती गरेर उसले जेनतेन आफूसहित परिवारलाई एक वर्षका लागि पाल्थ्यो । श्रीमतीलाई विवाह गरेर ल्याएपछि जीवन बदल्नका लागि १,००० कुखुरा अट्ने टहरो लिई कुखुरापालन पनि गरेको थियो । यसले उसलाई नमजाली घाटा गराएको थियो । त्यही घाटा, परिवारमा हुने कहिलेकाहीं बिरामी र बिरामी हुँदा काम गर्न नपाई हुने क्षति यसका कारण उसलाई केही ऋण लागेको थियो । यसैकारण उसको आर्थिक अवस्था कमजोर थियो । खेतबारीमा वर्षदिन काम गर्न नपुग्ने, खेतीकिसानी आफू र परिवारले मात्र गर्दा भाडा तिर्न र हरेक काम हेर्न नभ्याउने थियो । यसका साथै गाउँमा काम गर्ने ठिटाहरू बिदेसिएका र युवतीहरू युवकले पठाएको पैसामा जीवन जिउने भएकाले काम गर्ने मानिस नपाउने स्थिति थियो । सरकारी वा प्रतिष्ठानतिर दुवै जोईपोइले जागिर खान पाए गाउँमा प्रभाव बढ्ने, पढाइको सदुपयोग हुने र आर्थिक उन्नति पनि हुने उसले ठानेको थियो । यिनै कुरा पत्नीसँग बिहानको चिया खाने बेलामा भएपछि किशोर चिया खान पसलमा गएको थियो ।

पसलमा गएपछि उसले थाहा पायो । गाउँको रमणका छोरा राजनले सरकारी नोकरी पाएछ । मन्त्रीलाई चुनावमा सधाउने इन्द्रले पनि स्वकीय सचिव भएर काम गर्न थालेछ । मीरा र राजेशले भने नगरपालिकामा छुट्याउने विकासको कार्यक्रमको ठेकका लिई काम गरेर

घर धानिरहेछन् । श्रीराम, विश्वदीप र मेनकालाई भने अमेरिका, अस्ट्रेलिया र जापानको मिसा लागेछ ।

पसलकै गफमा श्रीकृष्ण भन्दै थियो, 'गाउँको सबैभन्दा भाग्यमानी त कमल नै हो । पोहोर मात्र बिए पास गरेको । यसपालि नै घरेलुमा जागिर पायो । अनि विवाह गर्न लागेकी केटी पनि बालाजु घर हुने बाबुआमाकी एकली छोरी रे । उसको त दुवै हातमा लड्डु । त्यति मात्र हो र ! चन्द्रमा सूर्य दुवै उसका दाहिने भएका छन् ।'

किशोर मनमनै सोचै थियो, 'ईश्वरले दिएपछि र भाग्यमा भएपछि परी परी आउँछ । चाहिँदैन भन्दा पनि पुन्याउन आउँछन् । तालुमा आलु फलेपछि त बगर खोतल्दा पनि सुन पाइन्छ । आशा नै नगरे पनि फल पाइन्छ ।'

त्यसैबिच किशोरले लोकसेवा आयोगले प्रशासकीय अधिकृत मागेको सूचना थाहा पायो । किशोर र शान्ति दुवैले एमए पास गरेका थिए । दुवैले फारम भरे । अधिकृत दर्पण किनेर ल्याई दुवै जोईपोइले छलफल गरी गरी पढ्न थाले । एउटाले बागबजारको इन्स्टच्युट र अर्काले बानेश्वरको इन्स्टच्युटमा तयारी कक्षा लिए । दुवैले लिखित परीक्षा दिए । डेढ महिनापछि नतिजा आयो । परिश्रम गरेर पढेर हो कि ईश्वरको अनुकम्पा हो दुवैले नाम निकाले । त्यसको दुई दिनपछि शनिवार थियो । दुवै हर्षित भई मन्दिर पुगेर ईश्वरका अगाडि विनीत रूपमा प्रस्तुत भए । दुवैले आँखाबाट आँसु झारी कृतज्ञता प्रकट गरे ।

अब अन्तर्वार्ता छ । दुईमा एकको नाम त कसो ननिस्केला भनी दुवै जना कुरा गर्न थाले । नतिजापछि दुवै खुसी थिए । उनीहरूले केही दिनपछि अन्तर्वार्ता दिए । दुवैको अन्तर्वार्ता एकै दिन थियो । अन्तर्वार्ता पनि राम्रो भयो । दुवै जना हर्षित भए ।

अन्तर्वार्ताको साता दिनपछि नतिजा निस्कियो । दुवैमध्ये किशोरको नाम थिएन । शान्तिको नाम वैकल्पिकमा रहेछ । नतिजा हेरेपछि एकले अर्काको मुख पनि हेन सकेनन् । बोल्न पनि सकेनन् । शान्ति भान्साकोठामा गइन् किशोर पूजाकोठामा । दुवैले आँसु एकअर्कालाई नदेखाई रोए । एक घण्टाअघि शान्ति धारामा गई मुख धोएर फर्की भने किशोर अर्को आधा घण्टापछि ।

त्यस दिनदेखि मनमा एककासि अशान्ति बढ्यो । श्रीमान् श्रीमती भए पनि बोलचाल कम हुन थाल्यो । एउटालाई चिन्ता पर्दा अर्काले सान्त्वना दिन सकछ तर दुवैलाई चिन्ता पन्यो भने सहानुभूति दिने पनि कोही नहुँदो रहेछ । दुवैले एकान्तमा आँसु झारी अनुभव गरे । बोलेर सहानुभूति दिन खोज्ये तर दुवैको वक धाँटीमै अड्किन्थ्यो ।

एक दिन दुवैले धैर्य गरी बोले । दुवैले सल्लाह गरी अर्को ज्योतिषीकाहाँ पुग्ने सोच बनाए । किशोरले ज्योतिषी, त्यो पनि अनुभवले नभई पढेर आउनेलाई नै भेट गर्ने निधो गरे । दुवै जना पशुपति पुगे । ज्योतिषीलाई चिना देखाए । उनीहरूले पूर्वसमय ज्योतिषीले भनेका कुरा, व्रत लिएका कुरा, सपनामा देखेका कुरा अनि नाम निस्केको ननिस्केको सबै बताए । ज्योतिष पुष्कर आचार्यले भने, 'व्रतको विधिमा चाहिँ कहाँ त्रुटि भयो कि ? व्रत बस्तै नबस्दा राम्रो तर बसेपछि त्रुटि हुँदा उल्टो फल मिल्छ । त्यति मात्र होइन भगवान्माको भक्ति नगर्दा ठिक छ तर भक्ति गर्नेलाई समय समयमा ईश्वरले परीक्षा लिन्छन् । सायद ... ।'

भगवान्मा विश्वास गर्दा नै फल प्राप्ति भएको कुरा त उनीहरूले लिखितमा नाम निस्कँदा नै गरेका थिए । त्यसैले ईश्वरप्रति अनास्था पनि रहेन तर मन भने दुवैको खल्लो खल्लो भयो ।

ज्योतिषीकहाँ पुगेर आएपछि दुवैले फेरि अझ निगरानी राखी ब्रत बसे । त्रुटि हुन नै दिएनन् । जतिसके राप्रो गरे । भगवान्ले लिएको परीक्षा उत्तीर्ण गरे त अझ राप्रो फल प्राप्त हुने आशा राखे । भगवान्ले दिंदा सम्हालेर नसकिने दिने कुरा पनि सोचे ।

ब्रतलाई निरन्तरता दिंदै दुवैले खानेपानी, प्राधिकरण, खाद्य संस्थानमा आवेदन भरे । अब त कहाँ पनि लिखितमा समेत नाम नै निस्केन । त्रिभुवन विश्वविद्यालयमा भरे । तयारी पनि धेरै गरे । परीक्षाको मिति सर्दै थियो । त्यसै समय शान्ति बिरामी परेकी थिई । परीक्षा परेको किशोरले थाहा नै पाएन । परीक्षा सकेपछि जाँच सकिएको थाहा पाए ।

दुवैले पढेको व्यर्थ भएको महसुस गरे । ज्यान रहे पढाइ, ज्यान नै छैन भने के पढाइ, के ईश्वरको नाममा कराइ भन्दै दुवैले चित शान्त पारे । फेरि अर्कोपल्ट लोकसेवाको फारम भरे । दुवैले मिहिनेत गरे । परीक्षाको अधिल्लो दिन शान्तिकी आमा र किशोरकी सासू बितिन् । परीक्षा परको इच्छा बनेर गयो । रातभरि आर्यघाट दिनमा परीक्षा हल ।

जिन्दगीले अति नै धोका दिएको महसुस भयो किशोर र शान्तिलाई । फेरि मन बुझाउन धामी ज्योतिषीकहाँ पुगे । धामी कामसमेत गर्ने ज्योतिषीले हातका रेखा हेर्दै भने, बाबुनानी, तिमीहरूको भाग्यमा त सरकारी जागिरको रेखा नै छैन । बरु राप्रा निजी कम्पनीमा प्रयास गर न । मेरो छोराले पनि सेना, सशस्त्र र प्रहरी सेवामा प्रवेश गरी काम गर्नु भन्यो । सेनामा अन्तर्वार्ता, सशस्त्रमा लिखित र प्रहरीमा त अभ्यासमा नै फालियो । अनि हातका रेखा हेरेर भनिदिएँ- भाग्यमा लेखेको पाइन्छ नलेखेको पाइन्न । तेरो पुरुरोमा सरकारी जागिर छैन भनेर । पछि एलजी कम्पनीमा जागिर पायो । राम्रै आम्दानी गर्दै ।

ज्योतिषीको सल्लाह शिरोपर गर्दै किशोर र शान्तिले निजी कम्पनीमा जागिरका लागि आवेदन दिए । सम्पर्कमा रहे । कहाँ अन्तर्वार्तामा फालिए त कहाँ पछि बोलाउँछु भन्दै टारिदिए । परीक्षा दिंदा दिंदा थाकेका किशोरले भने, धेरैपटक प्रयास गरियो । अब त केही लागेन । बरु गाउँका साथीहरूले खसीबोकादेखि लिएर विदेशमा काम गर्न जाने मान्छे अनि जग्गाको दलाली गरेर पैसा कमाइसके । आफ्नो भने सधैंको उही ताल । अब त ईश्वरप्रति संस्कारजन्य रूपमा जुन भरोसा थियो त्यो पनि रहेन । धर्मलाई व्यापार बनाउनेको भलो भयो तर धर्मलाई सच्चाइको मार्ग मान्न खोज्दा जीवन दुःखमा परिरह्यो ।

लाग्न त मलाई पनि त्यस्तै लाग्छ तर हरिहरानन्द गुरुले भनेको कुरा याद छ । कतै हामीले दान दक्षिणा नदिएर पो हो कि ? खिस्ट्रियन, बौद्ध, मुस्लिम र हिन्दू सबै धर्मले दानको कुरा गरेको छ । हामी पनि एकपल्ट असहायलाई दान दिने हो कि ? जति दान दियो उति पाइन्छ भन्छन् । कतै ईश्वरले धेर्यको नै परीक्षा लिएका हुन कि ? धन्दा नमान भगवान्ले दिंदा प्रशस्त खुसी दिन्छन् । भगवान्को घरमा देर हुन्छ अँधेर हुँदैन । सेवा गरेपछि भगवान्ले केही दिन कर लाग्छ नै । शान्तिले किशोरलाई सम्झाउँदै भनिन् ।

किशोरले शान्तिका कुरा माने । अब त किशोर र शान्तिले कुकुर र गाईलाई समेत भोजन गराउन थाले । वर्षको दुईपल्ट त वृद्धवृद्धालाई भोजन गराएर आशीर्वचन पनि लिए ।

ज्योतिषीको सारा कुरा बिसर लोक सेवामा फारम भरे । निजी कम्पनीमा पनि आवेदन दिए । लिखित र मौखिक परीक्षामा सामेल भए तर जागिर खाने नाम प्रकाशित भएन न त फोन नै आयो ।

किशोरले शान्तिलाई निजी विद्यालयमा पढाउन आवेदन दिन भने । शिक्षा नपढे पनि निजीमा

केही फरक नपर्ने भनी दुवैले आवेदन दिए । त्यहाँ पनि दुवैले परीक्षा दिए तर नाम निस्केन, निस्कँदै निस्केन । यसैबिच शान्तिले विद्यालयको एउटा अन्तर्वर्ता आफैनै प्रिन्सिपल साथीलाई दिए । उक्त साथीले नाम निकालिदिए त्यो पनि मासिक पन्ध हजारमा । पेडा खान नपाए दुधमा भए पनि सन्तुष्ट रहनुपर्छ भन्दै शान्तिले चित्त बुझाइन् । किशोरले पनि प्रयास गरे । आशिक समयका लागि काम पाए । त्यसले घर चले पनि व्यवहार चलाउन नपुग्ने भएकाले साथै जागिर खाँदा वर्ष दिनको सामल आउने काम गर्न नपाइने भएकाले जागिर खाएन् । एक दिन बेलुकाको खाना खाइसकेपछि सुल्ते बेलामा शान्तिले भनिन्, 'हातका मैला सुनका थैला... भन्थे तर होइन रहेछ । किशोर ! अहिले त हाम्रा पनि दुई बच्चा बढ़दै छन् । पेट बढ्ने, कक्षा बढ्ने, कपडाको मात्रा बढ्ने, ... हरेक कुरा बढ्ने हुँदै छ । त्यसैले यसरी जीवन चल्दैन । साराको घरमा भोज खान गएपछि आफूले पनि खान दिनुपर्छ । सारा ठाउँमा घाम, पानी भए मन सम्हालिन्छ तर कहीं घाम कहीं पानी देख्दा मन थामिँदैन । हामीले त सबै कुरा सहायीं तर छोराछोरीले सहन सक्दैनन् । हामीलाई धिक्कार्ने छन् । अरुका बाबुआमामध्ये कोही एक विदेश गएर छोराछोरी र परिवारका हरेक आवश्यकतालाई पूरा गरिदिएका छन् । हामीले पनि त अबको दुईचार वर्षपछि पूरा गर्नुपर्ला । त्यसैले विदेश जाऊँ ।'

शान्तिले फेरि भनिन्, 'सबैले भनेको ठिक हो, किशोर । देशमा काम गर्नुपर्छ भन्ने कुरा तर याद गर त त्यस्तो कुरा कि त नेताले गर्नन् कि त सरकारी उच्च पदका कर्मचारीले कि त विदेश गएर आउनेले । विदेश जानुहुँदैन भनी यहाँ काम नपाएका र पैसा कमाउन नसकेकाले भनेका छैनन् ।'

'साँच्ची शान्ति पहिला म विदेश जान्छु भन्दा तिमीले छेक्यौ । फेरि आज तिमी... । अँ, कै हाम्रो भाग्यमा नै नभएको हो त ? अनि व्रत के गर्ने ?' किशोरले विस्मित हुँदै सोधे ।

'व्रत शरीरले होइन, आत्माले गर्ने । व्रतले सत्कार्य गर्न हामीलाई सिकाएको छ । चित्त दुखाउन, चोरी नगर्न र लोभ नगर्न सिकाएको छ । सबैको हित गर्न सिकाएको छ । त्यसैको पालना गर्न तर शरीरलाई सुक्खा र बाँझो राखेर होइन । हाम्रो शरीरमा पनि अन्न रोप्ने, पानी हाल्ने तागत बटुल्ने त्यही तागतले सत्भावमा रहेको ईश्वरलाई सत्कर्म गरी सम्झने । त्यसैले धार्मिक संस्कारअनुसार व्रतको उद्यापन गरी आगामी शनिवार दुङ्ग्याउने ।' शान्तिले भनिन् ।

'त्यसो भए मेरो कुरा सुन, मनको चित्त नै बुझाउने हो । त्यसैले हामीले सुरूमा देखाएका केशव ज्योतिषीकहाँ एकपल्ट चिनो हेराउन जाऊँ न त ।' किशोरले शान्तिलाई भने ।

भोलिपल्ट नै मङ्गलवार परेकाले दुवै ज्योतिषीको घरमा पुगे । ज्योतिषीले दुई छोरालाई दुई नयाँ घर किनिसकेका रहेछन् । ज्योतिषीको घर पनि घर नै घरको बिचमा परेछ । आँगनमा नयाँ कार पनि किनेर राखिएको रहेछ । उनीहरूलाई ज्योतिषीको घर ठम्याउन झन्डै गाहो भएको तर अरु पनि मानिस लाइनमा भएकाले खासै सोधीखोजी गर्नचाहिँ परेन । एक घण्टा पर्खेपछि किशोर र शान्तिको पालो आयो । उनीहरूले पहिले हेराउँदा ज्योतिषीले भनेको र त्यही सल्लाह मान्दै देवीको सेवा गरेको कुरा बताए । उनीहरूले चिना पनि देखाए । सबै कुरा हेरेर सुनिसकेपछि चर्चित ज्योतिष केशव पौडेलले भने, 'तिमीहरू दुवैले भगवान्को सेवा त गन्यौ तर द्वारमा रहेका ईश्वरको सेवा गरेनौ । मन्दिरभित्र मुख्य रूपमा देवीदेवता भए पनि ढोकामा पनि त गणेश, कुमार, हनुमान, भैरवजस्ता देवता हुन्छन् । देवताको मूल

मन्दिरमा कसकसले पूजा गर्छन् त्यो त प्रमुख देवताले थाहा नै पाउँदैनन् त्यसको नामाङ्कन गर्ने त ढोकाको छेउमा बस्ने देवताले नै हुन् । हो, तिनै देवताको सेवा गरेनौ । तिमीहरूलाई थाहै छ । मुख्य देवताको भन्दा सहायकको मानमनिता धेरै गर्नुपर्छ भने । हो, तिमीहरूले त्यही कमजोरी गन्यौ । त्यसेले तिमीहरू दुईले कर्म गन्यौ तर फलका लागि सहायक भएनौ । 'अब के गर्ने त गुरु ? हामी त जीवनदेखि थाकिसक्याँ ।' दुवैले एकैपल्ट तर किशारेले बोलेपछि शान्तिले बिचमा आफूलाई रोकिन् ।

'अब मैले के भन्ने ? मैले भन्ने कुरा भनिहालै ।' ज्योतिष केशवले भने ।

'यहाँ बसेर त्यसरी चाकरी गर्नुभन्दा त विदेश जानु नै ठिक होला नि त्यसो भए, होइन त ?' शान्ति बोलिन् ।

'त्यो त तिमीहरूको मर्जी । यहाँ काम गर्ने भए चाकरी सुरु गर ।' ज्योतिषीले भने ।

'लौ, त्यसो भए हामी अब विदेश जान्छौं ।' किशोर संवेदनशील भई बोले ।

'ठिकै छ । तिमीहरूको इच्छा पूर्ण होओस ।' ज्योतिषीले बताए ।

त्यसको केही दिनपछि किशोर र शान्तिले मलेसियाका लागि काम गर्ने फारम भरे । दुवैको नाम निस्कियो । नाम निस्केपछि किशोर र शान्ति फेरि ज्योतिषीकहाँ गएर भने, 'गुरुदेव ! मलेसियाका लागि भिसा लाग्यो । अब एक हप्ता मात्र नेपालमा बस्छौं । मैले सिकर्मीको काम पाएँ । यिनले ज्यामीको काम पाइन् सिमेन्टी घोल्ने ।'

'लौ, तपाईंको ज्योतिषीलाई धन्यवाद । बाँच्याँ भने चार वर्षपछि भेटाँला ।' किशोरले सुनाए । दुइटै बच्चालाई विद्यालयको होस्टलमा किशोरले राखिदिए । शान्तिका भाइबुहारीलाई बेला बेलामा बच्चामाथि ध्यान पुऱ्याउनु भन्दै बच्चा, आफन्त र नेपालसँग छुटिएर नेपाललाई रेमिटेन्स बुझाउने गरी किशोरका जोईपोइ मलेसिया पुगे ।

## हार्दिक शुभकामना

२०७९ सालको दीपावली, नेपाल संवत्को नयाँ वर्ष,  
छठ पर्वका अवसरमा  
सम्पूर्ण पाठक, लेखक, विशिष्ट तथा आजीवन सदस्य,  
प्रतिनिधि, मुद्रक, ग्राफिक डिजाइनर, वितरक,  
विक्रेता एवम् शुभेच्छुकमा  
हार्दिक शुभकामना प्रकट गर्दछौं ।

शब्दाङ्कुर परिवार

## नीतु मुकुलका तीन अनुदित लघुकथा

### कात्रो

ठिहिन्याउने जाडो थियो । दियो पनि मधुरो बल्दै ॲंथ्रेरेसित जुइदै बिहानलाई पर्खिरहेथ्यो कि कति खेर उसलाई निभाइन्छ । दियोको भाग्य पनि कस्तो, चाहेर पनि आफै निभन नसक्ने । उज्जालो पनि दिन पर्ने दासत्व पनि स्विकार्न पर्ने । त्यहाँ रामदेई खाटको सिरानीतिर चुराविनाको रितो हात आफ्नो जवान तुलो छोरोको शिरमा राखेर उसको अन्तिम श्वासलाई पर्खिरहेकी छिन् । उनले आफ्नो श्वाससित छोरोको श्वास ल्यबद्ध गराउने प्रयास गर्दै सोचिरहेकी छिन्, हरे ! मैले आफ्नो श्वास छोरोलाई दिन सकदी हुँ त । मैले त आफ्नो उमेर बाँचिसकै । घरी घरी उनले आफ्नो औँला उसको नाक छेउ लगेर तातो निश्वासलाई अनुभव गर्छिन् । उनको सानो छोरो भने दियोनिजिकै एउटा च्यातिएको कट्टु मात्र जसले उसको पछिको भाग पनि पूरा ढाक्न सकेको थिएन; लगाएर गद्दाविनाको परालमाथि सुतेको थियो । त्यति बेलै आमाको प्रतीक्षाको पनि अन्त्य भयो । उनले उसको श्वाससित आफ्नो श्वास मिलाउनबाट त्राण पाइन् । खटिया गाह्ँ भयो । उसको छोरो मरिसकेको थियो । रामदेईले त्यहाँ सुतिरहेको सानो छोरोलाई जसको शरीरमा केवल फाटेको कट्टु मात्र थियो; बिउँझ( उदै भनिन्, छिद्वो दगुरेर जा । कहाँ गाँउबाट कपडा मागेर लिएर आइज् । मरेको मानिस नाड्गो जाँदैन ।

केटोले एकपल्ट आफैलाई हेच्यो अनि कात्रो लिन हिँड्यो ।

### अपार्टमेन्ट

‘हजुर ! बाबु अब अर्फै कति पर्खनुपर्छ ? आमालाई पनि तयार गरिदियाँ । अब हामीले उनलाई गाडीमा लिएर जाँदा हुँदैन र ?

‘अरे भाइ, अझ केही बेर पर्ख न सबै ठाँउ फोन गरिएको छ । उनीहरू आउँदै होलान् ? दुईएक घण्टा पर्खी न ।’ उनले त्यो सेतो बर्दीधारीलाई भन्न त भने तर मनमनै डर लागिरहेको थियो । अधि अधिको कुरो त अर्के थियो । उनी जब सरकारी अफिसर थिए, उनको बड्गलामा धुइँचो लागिरहन्थ्यो तर रिटायर्ड भएपछि त अहिले सन्नाटाले टोक्न दगुर्दै छ । बड्गलामा उनलाई राग्रो लाग्दैनथ्यो । छोराछोरी दुवै विदेशमा थिए । यसकारण उनीहरू सबैले तिनलाई अपार्टमेन्टमा सिफ्ट हुन भनेका थिए त्यहाँ उनलाई एक्लोपन अनुभव नहोस् भनेर । केही दिनपछि उनी पनि वर्ली इलाकाको एउटा महँगो अपार्टमेन्टमा सिफ्ट भए । त्यहाँ अनेक परिवार सँगै एकै ठाँउमा बस्थे । त्यो कुरो अर्के थियो तर कसैले कसैलाई चिन्दैनथे । केवल फ्लेटको नम्बरले मात्र चिनिन्थ्यो । उनले पनि १०५ नं. फ्लेटवाला शर्माजीको नामले पहिचान पाएका थिए ।

‘शर्माजी, के भयो ? सबै कुशलमध्गल त छ ?’ एउटा स्वरले उनलाई तर्साइदियो । शर्माजी दगुर्दै गएर उनलाई ॲंगालो हालेर धुस्त्युरु रून थाले । मानाँ उनले स्नका लागि नै धेरै समय काँध खोजिरहेका थिए । शर्माले भने, ‘साथी हेर न, तिम्री भाउज्यू हिजो राती

हृदयाधातले हामीलाई छोडेर गइन् । यी नर्सले सबै काम त गरिदिइन् तर उनलाई काँध दिनका लागि चौथो मानिस पाइएको छैन । छोरो आउनलाई दुई दिन लाग्छ ।

यति सुन्नेबितिकै ऊ एकाएक उफ्रेर पछि सन्यो उनीसित कसले तीन घण्टा खेर फालोस् सोचेर । आज त एक छिनपछि मेरो एउटा मिठिङ छ, अहिले आउँदै छु भन्दै गयो । त्यति खेरै तलबाट म्युजिकको तिखो स्वर आउन थाल्यो । ती तीन जनामध्ये एकजनाले 'बाबुजी के मैले तपाईंको केही सहायता गरिदिँ' भन्दै, तल फ्लेटमा गएर डोरबेल बजाएर निवेदन गर्दै भन्यो, 'तपाईंको माथिल्लो फ्लेटको शर्माज्यूकी पत्तीको मृत्यु भएको छ । कृपया म्युजिक बन्द गरिदिनुहोस् न ।'

ती सभ्य महिलाले गर्जिँदै भनिन्, 'द्याकै एक वर्षपछि मेरा पति आएका छन् । के हामीले आफ्नो फ्लेटमा इन्ज्वाय पनि नगर्न ?' धडाम शब्दका साथ तिनले दैलो थुनिन् । उनले सोच्न थाले, 'यो कस्तो विडम्बना, माथिको फ्लेटमा एउटी महिलाले आफ्ना पति आएकोमा अन्तरङ्ग पल इन्ज्वाय गर्दै छिन् त अर्कातिर शर्माजी आफ्नी पत्ती गुमाएकोमा शोकाकुल भएर रँझै छन् । 'बाबुजी, अब हामी अझै पर्खन सक्तैनौं ।'

त्यति खेरै तीमध्ये एउटा मानिस जसले धेरै अघिदेखि फोनमा कुरा गरिरहेथ्यो खुसी हुँदै भन्यो, 'बाबुजी, किरायाको काँध पाइयो ।'

शर्माले सोच्न थाले, 'अपार्टमेन्टमा बस्यो भने मरेपछि काँध दिने मान्छे पनि किरायामा पाइँदो रहेछ ।'

त्यसपछि चारै जनाले अर्थो काँधमा बोके अनि नर्सले घडा समातिन् ।

'राम नाम सत्य है ...'

## कुर्सी

घरमा निकै चहलपहलको वातावरण थियो । सबै जना घरको सजावट अनि खानपानको तयारीमा मस्त थिए । छोरो आफ्नो सासूलाई लिन एअरपोर्ट गएको थियो । रु कुनै समय पनि आउन सक्थे । आज पूरा सात वर्षपछि आफ्नी छोरीलाई भेटन उनीहरू अमेरिकाबाट आउँदै थिए । सम्झिनीले धेरै जोससित तयारी गरेको थिइन् । उनलाई धेरै विदेशी उपहार पाउने आशा थियो । त्यति खेरै कार आएर दैलोको अधिल्तिर थामियो । आमाले आउनेबितिकै छोरीलाई अङ्गालो हालेर उत्साहित हुँदै सोधिन्, 'कस्ती छ्यौ ?'

छोरीले भन्नुअधि नै सासूले भनिन्, 'अरे... यिनी त हाम्री घरकी सान र गौरव हुन् । यीविना त हामी सबै अधुरो छौं । यी त हाम्री छोरीजस्तै हुन् । यो त उनको ससुराली नभएर घर पो हो ।' आमा पनि सासूको मुखबाट छोरीको प्रशंसा सुनेर गदगद भइन् । सासूले आज उनलाई छोरा छोरा भनेर थाकेकी थिइन् ।

आमाको अन्तर्आत्मा खुसी थियो छोरीप्रति सासूको माया देखेर ।

खाना खाने बेलामा सासू र बुहारी मिलेर खाना मेजमा सजाउन थाले । सबै खाना खान बसे । आमाले प्यारोसित छोरीलाई आफूसँगै खाना खान भनिन् । त्यति बेला छ वर्षे नातिले भन्यो, 'हजुरआमा... तपाईं अर्को कुर्सीमा बस्नुहोस् । यो त आमाको कुर्सी हो जहाँ आमाले सबैले खाइसकेपछि एकलै बसेर खाना खानुहुन्छ ।'

बालापनको यो भाषा सुनेर जहाँ ससुरालीका मुखमण्डलमा मौनता छाएको थियो, त्यही आमाको आँखाबाट आँसु खसिरहेको थियो ।

अनुवादक : इन्द्र गिरी, सिलगढी, भारत

## कोरोना कहरको क्रन्दन

रामदयाल राकेश



यस्तै वीरगन्जस्थित एउटा सर्जिकल सफ्लाई स्टोरका कर्मचारी अहमदलाई विनाकारण कुटपिट गरेर उसलाई घाइते बनाइएको थियो । गत साल २४ मार्चमा लकडाउन लाग्न भयो । एउटा साइकल चालकलाई कुटपिट गन्यो । पुलिसले त्रिवि टिचिङ अस्पतालका तीन जना डाक्टरलाई विनाकारण कुटपिट गन्यो जब कि उनीहरू आफ्नो डयुटी सकेर क्वार्टरमा फर्किराखेका थिए । पुलिसको ज्यादती लकडाउनमा पनि बढ्ने गर्छ ।

यस्तै केही रोगीका कुरुवाहरूले भेरी अस्पतालका स्वास्थ्यकर्मीमाथि कुटपिट गरेर नराम्रो काम गरे । स्वास्थ्यकर्मीमाथि यसरी कुटपिट गर्दा उनीहरूको आत्मबल कमजोर हुन्छ । नागरिक समाजले यस्तो अवाञ्छनीय क्रियाकलापको पनि भर्त्सना गर्नुपर्छ ।

लकडाउनमा निषेधाज्ञाका बेला सरकारले खाद्य व्यवस्था तथा व्यापार कम्पनी र साल्ट ट्रेडिङ कर्पोरेसनबाट विक्री गर्न खाद्य वस्तु र ग्याँसमा २० प्रतिशत छुट दिने घोषणा गरे पनि तत्काल कार्यान्वयन नभएको दुःखलागदो कुरो छ । लोकप्रिय हुन हचुवाको भरमा कार्यक्रम ल्याउँदा २० प्रतिशत छुट घोषणामा मात्र सीमित भएको देखिन्छ । गत शनिवार अर्थमन्त्री विष्णु पौडेलले बजेट भाषणमा निषेधाज्ञाका क्रममा दाल, चामल, चिनी, पिठो, गेडागुडी, तेल र ग्याँसमा २० प्रतिशत छुट दिने घोषणा गरे । सरकारले २० प्रतिशत छुट घोषणा गरेपछि खाद्यान्न अर्डर गर्न सर्वसाधारणले छुट माग गर्दा पाएका छैनन् । यसबाट सरकारको विश्वसनीयता नै सङ्कटापन्न स्थितिमा पुग्न गएको छ ।

स्वास्थ्यकर्मीहरू त आफ्नो तलब पनि समयमा पाइरहेका छैनन । विशेष भत्ताको के कुरा गर्ने ? यिनीहरू जिउज्यान अर्पेर सङ्क्रमित बिरामीको उपचारमा सतत संलग्न छन् । आफ्ना परिवारका सदस्यलाई समेत भेटन पाएका छैनन् तर पनि आत्मसन्तुष्टिका लागि सेवामा जुटिरहेका छन् । यिनीहरूलाई सलाम गर्नुको साटो दण्डसजाय दिने गरिएको देखियो । एक जना स्वास्थ्यकर्मी मलिलकले त एकलै माझीघर मण्डलामा दिनहुँ धर्ना दिइरहेको पाइयो । सेतो पाटीमा ज्येष्ठ २२ मा प्रकाशित एउटा लामो कविताका केही पञ्कितहरू मलाई समसामयिक स्थितिको वर्णन भएकोले अनुमति चाहन्छु :

कोरोनाको यो महामारीमा

अस्पतालका शैव्या र बरन्डाहरूमा

जीवनमरणको दोसाँधमा जुधिरहेका

कर्तै ! ती जीवनहरूको अन्तस्करणको

आवाज सुन्ने कोही नभएपछि

डरत्रासमा गुज्जिरहेका र

वियोग र वेदनाको पीडाले

चहराइरहेका ती आला घाउहरूमा

सान्त्वना र सहयोगको

मलमपट्टी लगाउने कोही नभएपछि

चुनावका ती मूल्यवान् भोटहरूले

उनीहरूलाई नै गम्भीर चोट दिँदै

इमानदारिता र मानवताको

साइनो सुन्ने कोही नभएपछि

फूलजस्तो सुन्दर मेरो देशमा

सधैं भुटको खेती गर्ने

कपटी खलपात्रहरूको उत्थनन भएपछि

देशविकास र समृद्धि त कोरा कल्पनाले

दैनिक खाने गाँस र भुप्रोमा छानो हाली बस्ने बास नभएपछि

धोकेबाज राजनीतिज्ञहरूको त कुरै छाडैं

जनताको आशा र भरोसाको केन्द्र कोही खास नभएपछि

आज मेरो देश छटपट गर्दै छ ।

(अर्जुन केसी, आज मेरो देश किन रोइरहेको छ)

यस्तै वरिष्ठ पत्रकार सीताराम अग्रहरीले आफ्नो फेसबुक स्टाटसमा एउटा कविता पोस्ट गर्नुभएको पाइयो । सत्तालिप्साका लागि राजनीति गर्ने नेताहरू सत्तालोलुप भएर आफ्नो आदर्श, नैतिकता तथा कर्तव्यको तिलाऊली कसरी दिन्छन्, त्यसको टडकारो अभिव्यक्ति यहाँ भएको देखिन्छ । यो कविता हिन्दी भाषामा लिखित छ :

कहाँ हो सरकार

भूख से भूख का दौर खूब काटा है आपने

आदमी होकर भी आदमीको खूब बाँटा है आपने

नदी पार कर एहसास, एहसास सारे भूल गए

जमीर, जड़, जमीन खूब भूल गए, वाह क्या खुल गए

संवेदना आपं जैसा काई नहीं लाखाँ मे

बच्चों का चीत्कार, माँ की पुकार पिता की आह सब बेकार

पेट से पट्टी बाँध मायूस

तडप रहे बेबसों का वारिस कोई नहीं

वे न धन सेठ, बुद्धिजीवी न पत्रकार आप के कहाँ है सरकार

आजको राजनीतिक माहोलमा सत्ताधारीमा संवेदनशीलताको नामोनिसान नहुनु सबैभन्दा डरलाग्दो स्थितिको परिचायक हो । मानिस जब असंवेदनशील हुन्छ तब ऊं जे पनि गर्न सकछ । मानवताको हत्या गर्नु पनि उसका लागि साधारण काम जस्तो हुन्छ । आफ्नो स्वार्थपूर्तिका लागि मृत्युको सौदागर जे पनि गर्न सकतछ । पत्रकार र बुद्धिजीवी सबैलाई लात मार्न सकछ । यिनीहरूको स्वरलाई सदा सदाका लागि बन्द गर्न सक्छन् किनभने यिनीहरू सत्यको पर्दाफास गर्न स्वयाउँछन् । यसै सबका लागि त यिनीहरू आफ्नो नैतिकताको बलि कदापि दिँदैन ।

क्रमशः

## के छ र निन्दगी बिताइदिन्छु

युवराज मैनाली



निरन्तर रूपमा नेपाली साहित्यको सेवामा तल्लीन रहेका कालीप्रसाद रिजालले जीवनका प्रत्येक पक्षबाट दुःख, पीडा र उत्पीडनको उकुज सुम्मुम्याएका छन्। कवितामा विविध पक्ष लिइएकोले कविले कवितात्मक लहर पाउनुपर्ने भागमा हाम्रा आलस्यता घच्छच्याउन आइपुग्छन् भने कतै राष्ट्रप्रेमको उद्गारमा वीरस प्रदान बनिदिन्छन् साथै कतै आशा, निराशा, आक्रोश, विक्षिप्तता, शान्ति, प्रगतिजस्ता पक्षमा आवेष्टित हुँदै पुनः अवसादका फिजहरू फुट्न पुग्छन् जसले कवितालाई विसङ्गतिवादितर मोडेको छ। सामाजिक उत्पीडन, विशिष्टता, विवशता, छटपटाइका साथमा राष्ट्रिय समस्याहरू प्रायः सबै स्थानमा उत्तिकै प्रवाहमा छन्। कतै व्यङ्ग्यात्मक पारामा विकृतिहरू नञ्च्याई सोको फराकिलो बाटो देखाइदिन्छन्। बाटोमा कतै तगारो छ कतै बाटै सङ्कुचित छ। प्रायशः राष्ट्रिय समस्या र सोको पूर्तिमा देखाएको बाटो कविको सर्वोत्तम सफलताजस्तो लाग्छ। जुनसुकै मुलुकको सामाजिक क्रूर चक्रव्यूहमा पैलिंदा वा राष्ट्र नै अस्तव्यस्तताको अँधेरीमा पुगदा सङ्केतकर सचेतकका रूपमा सक्रिय साहित्य नै भएको हामी पाउँछौं। बिंगदो हालतको व्यस्तता छ भने सो हुनुमा किन र भएमा त्रुटिहरूको सरल चैतन्यता सञ्चारण गरिदिने सफल साहित्यिक हो र उसले सोको अभिव्यञ्जनामा पनि औकातअनुसारका सरल एवम् सरस शब्द चयन गर्नुपर्छ। साहित्यजस्तो व्यापक परिधिको प्रयोजन जब बौद्धिक वर्गको लागि मात्र हुन्छ सोको उपादेयता आंशिक वा एकाकी हुन्छ। त्यस्तै त्यहाँ मौलाएको राष्ट्रिय समाधान पनि आंशिक बनी एक पक्षलाई मात्र प्रतिनिधित्व गर्छ। अतः यसमा संबोध्य सरलता परिपूर्णित हुनुपर्छ। फर्सीको जरोभै कडा भावमा प्रतीकतामा भनाइ ढालिए पनि अर्को रस प्रदान गर्ने कवितामा वास्तविकता पर्गेल्न साधारण पठित व्यक्तिले सकतैन। हिजो, पिंजराको सुगा प्रत्येक गाँडागोठालाका मुखबाट सुनिन्थ्यो, अनुभूति भावपक्षमा पोखिएर वा प्रगाढता प्रदान गरेर होइन कि सोको ताल, लय र छन्दानुलङ्घकार हृदयिक आन्दोलनले। त्यसमा कविताको पूर्णतः साफल्यता होइन कि बरु रुखाएकोमा आंशिक पक्षमा मात्र सफल छ। यदि भावानुभूतिमा आफू परिपक्व भइदिएमा सोको सरलतामा पूर्णता भन्न सकिन्छ। साहित्यिकताका लागि दायित्व होइन कि सर्वसाधारणका लागि पनि एक किसिमको आस्वादन दिन सक्ने व्यक्त्याई बढी साहित्यिक ठहरिन्छ। मुनामदनको भनाइ मुक्तकण्ठमा कलवरित हुनुमा यही विशेषताले आफ्नो पूर्णता जमाएकाले हो। प्रतिष्ठित साहित्यप्रेमी कालीप्रसाद रिजालका अधिकांश उद्बोधन अभिव्यञ्जनामा सरल छन्, बेरलै ताल, लय र स्वच्छन्दताको छन्द जुन रिमाल, भूपिले लिएका थिए-लिएका छन्। साहित्यिक जनमुखिया काव्यमा सर्वत्र मुखरित छ। यही आधारमा पनि काव्यात्मक शिल्पी-शैलीको सही प्रयुक्तता भएको प्रतीति भाव गराइहाल्छ। कवि-साहित्यकारहरू आफू मात्र खान चाह्नदैनन्। उदारतापूर्ण दृष्टिमा उदारपूर्ण व्यवहार प्रयोजनता हुन्छ। उसको मनमस्तिष्ठ याने हृदय नै सार्वजनिक भइसकेको हुनाले त्यस्ता साहित्यिक पूर्ण रूपमा समग्रताको समस्यामा आफू फक्रिने र मस्काइमा फक्रिने, त्यस

मर्स्ताइको दिगोपनालाई 'गाइड' गर्न साहित्य भएकाले साँच्ची नै उसका सहयतापूर्ण व्यवहारको कार्यान्वित उद्बोधन कलमी आन्दोलनमा कुनै स्वच्छ कापीका करमा शोभाका रूपमा पोखिँदै जान्छन् । फेरि साहित्यप्रेमीहरू माग्ने परम्परादेखि वाक्क भइदिन्छन् र माग्न पर्ने विवशतामा विदीर्ण मौन भइदिन्छन् । माग्नु मात्र जीवन सार्थकता होइन । त्यस सार्थकताका लागि आफूले खियाउनुपर्ने दश नड्ग्रा र त्यसपछि मात्र खाना, नाना र छानाको समस्या हट्ने छ भन्ने पक्षमा कवि रिजाल विश्वास राख्छन् । पाखुरीको पखेरीमा खनीखोसी पसिनाका जलले सिँचाइमा मात्र पौरख रोपाइको वास्तविक बिच अङ्गकुरित हुन्छ र हात हातको दाम्लो बाँटेर देशोन्नतिको पाठमा आफू धकेलिने कुरा बताउँदै—

म त हातैहातको दाम्लो बाटेर

भोलुङ्गे पुल हाली दिन्छु

बाटो खन्दाखन्दै सगरमाथाको देशलाई

स्वर्गभन्दा माथि पुन्याई दिन्छु

उभिदिन्छु आफ्नै पाइतालामाथि

ढकमकक फुलेर आकाश छोइदिन्छु

छाँगा र छहराको कपालौं सुम्मुम्याएर

बिजुली बत्तीको फूल सिउरी दिन्छु

माटोको ढुकुटी खोली दिन्छु

ैभवको चुली बनाई दिन्छु

मेरी मायाको नाकमा हीराको होइन

म त पसिनाको फुली कमाई दिन्छु ।

भनिदिन्छन् । परिश्रममा विश्वास गर्ने सर्जक आफू काव्यमा उत्रिएर समाजसुधारका सदोक्ति छाडिदिन्छन् । आलयको मगाइ नै दयाको भिख हुन्छ । कवि रिजाल दया र मायाका पात्र बन्न चाहेदैनन् । उनी त परिश्रम नै परिश्रमको थुप्रोमा आफू पुरिएर पनि देशका धाँजाका पारालाई सम्याई यौवन लालित्य भित्र्याउने प्रयत्नमा मिहिनेतका महावाणी छाडिदिन्छन् । धर्तीको हराभरामा कवित्वको हृदय बढी आन्दोलित हुने भएकाले हुन सक्छ सबै प्रगतिवादी साहित्यकारको व्यक्त वा अव्यक्त धारणा यस्तै परिश्रमपछिको फलको माग र सो फलको उपगेगाइको सन्देश छाड्छन् । कवि प्रत्येक उषामा ओर्लने किरणजरै त्यसैसँग आआफ्ना परिश्रमका पसिना यससँगै इन्द्रेणीभैं सप्ताकारमा भल्किदिन चाहन्छन् । प्राकृतिक हराभराले यौन वयस्कतामा धर्ती मुस्कुराओस् । यही परिश्रमको पसिनाले आफू नभए पनि आफू भनाउने भावना जिउँदै रहेको हुन्छ भन्ने राष्ट्रिय चिन्ताको चिन्तन आफ्नो वैचारिक विस्तारको पर्याप्त पोखाइ छ, 'म मरे पनि मेरो देश बाँचिरहोस्' मा । आजको भौतिकी सन्त्रस्तता रोक्न सक्ने एक मात्र आध्यात्मिकताको मूल कारण अहिंसा र यसै अहिंसाका बौद्धिक तरङ्गहरू तरङ्गित गराउँदै विश्वलाई ढाक्न सफल भयो । यस्तो मेरो मातृभूमि हिमशृङ्खलाको सौन्दर्यमा वेष्ठित भएर रहोस् । यही नै कविको आफ्नो आकाङ्क्षा यसमा अन्तर्निहित छ । अल्छीमा अल्मलिएको अनिदैपनामा घच्चव्याएर कवि काव्यात्मकता दिन्छन् र देशको गरिमा उच्च राखिराख्न उनी ठारै ठारैं सन्देश दिन्छन् ।

कविमा हिजोको विद्वान् विदुषीको प्रतिनिधित्व पनि नाश नहोस्, देशको अस्तित्वमा जसले अस्तित्व भराउने काम गरे तिनीहरू पनि हाम्रा स्मृतिबाट अलगिनुहुन्न भन्ने उद्घोष गर्छन्-

हिजो हामीले आकाशमा थपेका तारा चम्पी नै रहन्  
माटामा राखेको प्रतिज्ञा सारा इयाङ्गी नै रहन्, इयाङ्गी नै रहन्  
सूर्यचन्द्रको रातो भण्डा बलोस्, बलिरहोस्

नचुडिदिउन् यी फूलहरू, नछरिउन् यी फूलहरू

भन्दै कुनै एकत्रित शक्तिको आव्वानमा कवि विकास अभियानको फूललाई फलाउन चाहन्छन् । हो, कविको जस्तै भावनामा परिश्रमको मिठास पाइन्छ । यस्तै परिश्रमका पसिनाबाट मात्र देशविकासको सम्भावना सिँचित हुन सक्छ । कोरा आदर्श र भाषणमाभन्दा जनजीवनका काममाममा साहित्यको कोमलता बढी भल्कने हुन्छ । कविको जतासुकैको नारा यो नै भइदिएको छ । यसै आव्वानलाई अधि सारेर भावहरू पोखिएका छन् । उनमा देशप्रेमका स्तिंग्ध भावनाहरू खचाखच हुँदै देशोन्नतिका लागि जुन अधिकार चाहिन्छन् तिनै अधिकारको खोजमा एकोन्मुख भएका छन् । यस बाटाबाट अलग भएर भ्रमित भएकाहरू पनि यसमै समाहित हुन कविको गहिरो आग्रह छ । यति भएपछि मात्र विकासका आरामदायी अनुभूति सबैतर फैलिन्छन् । अहम् र स्वार्थमा भासिएका अधिकारहरू जुन कार्यणिकतामा पुकारिएका हुन्छन् तिनलाई छर्लङ्ग्याउनु हो । यसकै अर्को धक्का टक्साइमा परेको हुन्छ भन्दै कवि भाव पोख्छन्-

कर्तव्यका करूण पुकार उठछन् बारम्बार  
ठोकिकौदै पल्टा खान्छन् अहँ र स्वार्थका भित्तामा  
त्यहाँ प्राप्तिको लिप्सा मात्र  
कत्ति छैन दायित्वबोध

यान्त्रिक युगको आगमनले यन्त्रहरूका मात्र विकासमा मानिसलाई यान्त्रिकता प्रदान गर्ने मात्र होइन कि सोका साथ जीवन वास्तविकताका साधन- अधिकार र कर्तव्यलाई पनि अङ्गीकार गरिएको छ । एक जमात केवल दायित्वका बढी बोझमा छन् । उनीहरूलाई कर्तव्यको मात्र पाठ थाहा छ । प्राप्तिको सकारात्मक चाख मात्र थाहा छ विपरीतमा चाख छैन भने अर्का थरीलाई दायित्वमा रतिभर चासो छैन केवल निर्लिप्त स्वार्थ खोजाइको अनुशासनहीनतात्मक पश्चिव्यवहारको मात्र धूनमा रत छन् । यी दुई गोरेटाका समग्रता कवि पहिल्याउन खोज्छन् । दुवैलाई आपसमा संलग्न गराइदिन चाहन्छन् । कविताको मुक वेदना पनि यही रहेको छ-

प्रत्येक हत्याको जिम्मेवार बन्नुपर्छ  
बाँच्न चाहन्छौ भने  
प्रत्येक पापको पीडा खप्नुपर्छ  
होँस्न चाहन्छौ भने

हो, जिम्मेवार नभर्को मान्छेको मान्छेपनाको बँचाइ यस दायित्व उद्गमस्थलमा हुनुहुँदैन । प्रत्येक हुने वास्तविकताको भावी अपेक्षा राख्ने व्यक्ति अरुका पराधीनतामा लालची बन्नुपर्छ । यता आफैनै कर्तव्यका मिठा फलहरू भोग्ने मान्छे बन्नुपर्छ, नत्र उसभित्रको खोक्रे राष्ट्रियताको माने नै के ? प्रत्येकको सुषुम्ना गति छान्नुपर्छ, आर्तनादका सङ्गीतमा आफू नाचिदिन सक्नुपर्छ । कसैले देखिदिएका सपनाभित्र हामीले पाउने भर्यौ भने देशको इतिहास टुक्रिन्छ र त्यस टुक्राइमा अर्को पक्ष प्रदान गर्न सम्झौतापछिको कर्तव्य एवम् अधिकारका क्रमिक पाइलाहरूमा अधि बढ्नुपर्छ । यस सन्दर्भमा कविकण्ठ स्फुरित हुन्छ यसरी-

पसिनाले लेखिएका आफ्ना इच्छाहरू  
 अँगन तिम्रो ढकमक्क हुनेछ  
 आज रापिदेऊ कर्तव्यका विरुवाहरू  
 भोलि अधिकार लटरम्म हुनेछ  
 भत्काइदेऊ छातीको पर्खाल  
 अँगालोभरि संसार हुनेछ

एउटा व्यक्तिको विचार विश्वव्यापी हुनुपर्छ । एउटा भनाइ वहका बहकाइमा बहकिने खालको हुनुपर्छ र त्यसले सामाजिक अभिलेखनमा नाड्गोपन उतार्न सक्नुपर्छ अनि मात्र प्रबुद्ध साहित्यका बौद्धिक परिपक्वतापूर्णका पोखरी केन्द्रस्थलबाट तरड्गिदै गएका लहरजस्तै विश्वव्यापी बनिदिन्छन् । छातीमै पर्खालका बन्देज राख्ने व्यक्ति आफैबाट संसार छापिरहन्छ र ती छातीका सङ्कुचित विचार डाँडका इँटाहरू गर्ल्यामगुरुम भत्काइदिएपछि मात्र विश्वदर्शन पाइन्छ भन्ने कवि भावना मुटुका कथामा राष्ट्रिय चिन्ताका त्यस्तै भावहरू विशृङ्खलित भएर पोखिएका छन् । कवि/साहित्यकार राष्ट्रका सम्पति भएका कारण चिन्तामा उनीहरू सदैव व्याकुल बनिदिन्छन् । जब नेपालीको दर्दनाक हविगत देखिन्छ तब उनीहरू तड्पिन्छन्, छटपटिन्छन् र रोइदिन्छन् अनि भन्छन्-

विश्वजत्रै छातीभित्र  
 नेपालजत्रै मुटु दुख्यो

विकार र विकृति पर्गेलिदिने स्वतन्त्र बाटो साहित्य भएकाले विकारको सिकारमा संस्कार लिपिएको पनालाई पनि कवि सम्भवताको भव्यता प्रदान गर्ने आदर्श तयारीमा होलान् । त्यसैले त्यो द्वन्द्वात्मक युद्धमा एउटा मुटु, दर्द खसालिदिन्छ अरूमा चैतन्य पढाउन, राष्ट्रिय समस्याहरूका सङ्ग्राममा । पौरखका पाखुरीका डोरीमा धैर्यका डोरी बाँधी आफू अनि देशलाई त्यसैसाथ अघि बढाउने कविसाहित्यको आफैनै उक्साहट हुन्छ । त्यस भावभित्र मसिना असमानता, दर्द तथा दुःखका मात्रासम्म पनि देख्न चाहँदैनन् । त्यसले प्रत्येकको दीनहीन दारिद्र्य र आर्तनादमा कवि एउटाको वैभवमा आफू विलासी बनिदिन चाहँदैनन्, एउटा मानवताको त्यही चाहना यसरी पोखिन्छ-

ऊ अक्सर हाँस्दैन र जिद्धी गर्दा  
 निनाउरो भएर भन्छ-  
 कसरी हाँस्छु जब अर्को थरी भाइ रोइरहेछ  
 उसको स्वर प्रतिध्वनित भझरहेछ  
 हाम्रो मुटुको भज्याड्बाट  
 अब पसिना बगाझी आफ्नो लागि

तिमी निरास भएर रायौ होला  
 त्यसैले उसको मुटु दुख्यो

हिजोआजका लागि समेत मरिदिने नेपाली आज आफैनै भाइका दीनावस्थाप्रति मर्न सक्दैन, त्यसैले उसको मुटु दुख्यो । मानवता विचलित बन्यो, स्पन्दित बन्यो । राष्ट्रियताका कवि राष्ट्रियताकै सन्दर्भमा नेपालको अस्तित्व जोगाउन कवितात्मक आक्रमण गरिदिन्छन् र चहन्याएका आफूभित्रका मुटुका दरारमा भावनाका मलम लगाउँछन् । यसरी हामी हामीमै

बॉडियाँ भने अस्तित्वको सीमा टुङ्गिने छ । देशको निशाना प्रलय हुन्छ । यसै विचारमा कवि अभिव्यञ्जनात्मक सिर्जना बगाउँछन् । ती मुटुभित्रका दरारहरू जुन जिल्ला र अञ्चलका दोसाँध लगाएर उभिएका छन् तिनलाई बग्न वास्तविकता प्रदान मौनताले गर्छ । फेरि विकासका धरातलमा खुम्खिएका र च्यापिएका चिराहरू बढी दरारिँदै जान्छन् । उनका सहपाठीका सयकडाँ आफ्ना भोक, रोग र शोकले प्रताडित छन् । त्यस्ता मुटुलाई नुनचुकको चहन्याइ होइन पसिना, सिप र सहानुभूतिका रसले धोइदिनुपर्छ, भावनामा होइन, सार्थकतामा अघि बढनुपर्छ भन्दै कवि बोल्छन्-

चहराउने औंसुले होस्

उसको मुटु पसिनाले धोइदेऊ

सुस्केराको वाफले होइन

विश्वासको श्वासले छम्की देऊ

अजर र अमर अनन्त त्यो मुटुमा

कर्तव्य र पौरखको मलहम लगाई देऊ ।

उनी कर्तव्यमै विश्वस्त छन् र तिनै विश्वासलाई अरुमा सार्न चाहन्छन् । कामपछि माम र ठाम पाइन्छ हो, त्यसमै कविताका अनुराग लुकेछिपेका मात्र होइनन् व्यप्तिमा छन् । ज्योतिको निर्भर'मा भने कविभावनाको ओर्लाई पाइन्छ भलै कि यहाँ पनि पटक पटक परिश्रम र पसिनाकै बिस्कुन सुकाउने आहवान छ । विशेषतः कवित्वशील हृदयहरू स्वाधीनताका क्रान्तिपनामा उन्मुख भझिदिन चाहन्छन् । भावनात्मक गुडाइका लागि चाहिने वास्तविकता त त्यो हो तर कवि कोरा शान्तिका बौद्धिकपन प्रदर्शन गर्छन् । यहाँको ज्यातिको प्रकाश हो- नेपाल र यसको शान्ति त्यसपछि पसिना । पसिना पोख्ने पौरख लेउ भन्ने कवि पौरख पोखाइको बाटो देखाउन पछि लाग्छन् । कवि बैरागी काँड़लाका भावनात्मक उच्चता र उन्मुक्ततामा लिप्सा पाइन्छ । यसको मतलब पर्दावादमा रिजाल सफल छन् भन्नचाहिँ ढ्याकै खाजिएको होइन । कवि पौरखबाटै देशविकासको उच्चतामा विश्वास राख्ने राष्ट्रवादी कवि पसिनाका बिस्कुन असरल छाल चाहन्छन् जुन प्रगतिले मूल्यहीन पारोस् । त्यसप्रतिको बयान वर्णन यस आवाजमा छैन । छातीलाई यौवनका वासन्ती, सयपत्री र लालुपातेका स्वरमा विस्तारित गरिदिने कविको चाहना पूरा गर्ने बाटा यसरी खुल्छन्-

पसिनाको अक्षय वर्तनमा

सतसत मुस्कान जग्मगाउन देऊ

सतसत मुस्कान जग्मगाउन देऊ

ज्योतिको निर्भर

ज्योतिको निर्भर'मा आहवान र उपदेशका बाटा पहिल्याउने कवि नयाँ दरदरमा बग्ने वासनामा भने प्राप्तिको वासना आइसकेको बताउँछन् । उनी खाली प्राप्तिका चहक सर्जक बनी दिन्छन् प्रेरणापक्षका । एकत्रित शक्ति जुन हिजो छिन्नभिन्न थियो आज त्यो हराभरा भएर फैलिएको छ । त्यस फैलाइमा हामीले आफूभित्रका छातीमा अर्को जन्म गराइसक्याँ । कोसी र मेची हाल हरेकको धड्कन बनिसकेको छ । हिजोको उदासिन क्षितिजमा तरङ्गिएका वादल रूपहरू कुनै साना इकाइमा को च्यापिएका छन् र आज छुहू अनुकृति खडा भएको मानीँ ? प्रत्येक शिशिरपछिको वसन्तमा जस्तै निराशाका फिक्रेटाहरू । आशा, उमड्ग र उल्लासका फूलहरू फुल्ने तरखरमा बिस्त्वा पाउलिएका छन् । कवि भौतिक आणविक शक्तिबाट सन्त्रस्त

भइदिन्छन् र यसका उपस्थितिमा निसासिने शान्तिका परेवाको जगेन्टा गर्न कवि आतुरिएका छन् । जसरी भावनाको पोखाइ यसमा असरल्ल भएर देखा परेको छ । नेपालका प्राकृतिक वक्षमा शान्तिको उद्गम गराउने कविको अभिलाषाको उछाल जलशक्तिको परीक्षण गर्न चाहन्छ । देश हाँसे देशवासी हाँस्न सक्ने छन् । त्यसैले वासनाका बर्णेचा आज कक्रिएका छन् भन्दै कवि लेख्छन्-

मनका गमलामा रोपेका थियौ जुन फूलहरू

अब त अनुहार फक्रिएजस्तो लाग्छ

सपनामा विछोडिएका खुशीहरू

आँखाका सङ्घारमा टुप्लुक आइदिएजस्तो लाग्छ

विश्वास जो हराएको थियो यहाँका यहाँ

आज माटो पल्टाउँदा त्यही पाएजस्तो लाग्छ

सुन्दर शैली र भावनाका व्यञ्जना यहाँ पोखिएका छन् । कविको विचार एकाकी अनुभवको भए पनि विश्वकै प्रतिनिधित्व गर्न सक्ने विचार उद्घोषणमा सामूहिकता रहन्छ । कविका आफ्नै अनुभूति हुन् । त्यहाँ आफै विचार रहलान् । वैचारिक सङ्कुचन यस कविताको मौलिकतामा कवित्वचेत फैलिएको छ । कविको सर्वपक्षीय हृदयले आफ्नो मनबाट अरुका विचार विशृङ्खलित विश्वका सबैजसो साहित्यकारले गरेका छन् । फेरि विकास सफलतामा उनीहरूका हृदय जहिले पनि बढी तृष्णायुक्त हुन्छन् र त्यसै कारण उनीहरू तिक्ततामा पुग्छन् तर कविका पक्षमा विकास अशेषको सुस्करेबा हो, जुन विकासबाधक हुन्छ । यहाँका कोमल विचारहरू सुषुप्तमा छन्, समस्यासम्म बताइदिने साहस यहाँ छैन । स्रष्टा र द्रष्टा दुवैको हुनुपर्छ । यहाँ एकको आंशिकता छ । सर्सरी हेर्दा कविताप्रतिभा स्फुरणका अभावमा करकापमा त लेखिएका होइनन् ? प्रश्न खडा हुन्छ । यिनै प्रश्नमा आफ्ना भावनात्मक स्वरूपलाई उतार्न खोजेका छन् तलका पञ्चवित्तले-

चन्द्रमाजस्तो राजाले

तराइको जुलुस ल्याएजस्तो लाग्छ

नयाँ दिनको हरहर बास्ना

अब त चले जस्तो लाग्छ ।

यहाँ केही विचार विस्तार पनि छ । दैशलाई गगनजत्रै मानी सोको शीतलता दिने राजा भइदिएमा ताराजस्तै पिलपिलाउँदा जनता हुन्छन् । यसैको कल्पित सार्थकतामा भावना निमग्नित होला । कविको शान्तिप्रियता कल्पनामा बढी साङ्गोपाङ्गोमा अविरलतामा साफल्यता पाउन सकछ । कवि रिजाल नेपालीहरूको अधिकतर कदर गरिदिन चाहन्छन् र त्यस्ता भावनाका प्रतिरूप परेवाको प्रतिनिधित्वमा विश्वभरि फैलाइदिने मनसुबा प्रकट गर्छन् । परेवाको प्रतीकताका आधारमा बौद्धिक माटो फुड्गिन्छ । सो फुँगाइमा प्रगतिका बेर्ना हुर्काउन मलजलविनाको स्थल मात्र रहन्छ । कोरा नेपाली भावनाले नेपाली बर्निदैन । सो बनाइदिनका लागि नेपालीत्व प्राप्तिका केही स्मृति आफूपछि छोडिदिनुपर्छ । मातृऋणको बोझता र सहिदको स्पन्दन अलिक भए पनि साकारता पाइनुपर्छ । त्यही साकारतामा नेपालीत्व, नेपाली फक्रिने छ । बल्कि यो अस्तित्वका अनुवृत्तिहरू विश्व ब्रह्माण्डीय गाँडागल्छेडामा टाँगिन थाल्छ । वास्तविक सुख संवृद्धि र सन्तोषका सुरक्षेराहरू रलाइदिन सत्यम् शिवम् र सुन्दरम्को एकाकार सहिद स्वप्न साकारमा हुन्छ । भावना नरहेमा नेपाल केवल नेपाली नै

नेपालीको बन्ने छ होइन त्यसो भए नेपाल नेपालै नेपालको नेपाल बन्ने छ भन्ने आदर्शताका भावनात्मक अनुरागमा डुबुल्की मार्ने कवि रिजाल भावनाको गाग्रीभित्र छचल्काएको अभिनयी बनिदिन्छन् - प्रत्येक पधेर्नीको हातमा । पङ्क्तिबद्ध विकास तब नै सफल छ जब परेवाको उन्मुक्त उडाइ छ निस्सासियता छैन, जनताको लिपिमा महावाणीको सार्थकताको प्रफल्ल मुस्कान ओल्टाइपल्टाइको क्रमिक पङ्क्तिमा पाइन्छ अनि त्यहाँ कवि भन्छन्-

त्यसैले देशको कुना कुनामा उभिएर म भन्न सक्छु

प्रत्येक नेपाली आज सिंगौ नेपाल भएको छ

देशभर उठेको उल्लासको लहरलाई छोएर भन्न सक्छु त्यसैले

आज नेपालै नेपालको नेपाल भएको छ

आज नेपालै नेपालको नेपाल भएको छ

देशगत भावनाले बीजाड्कुर गरिदिने कविसाहित्यकार नै हुन् । विचार मग्नताका पारामा उनीहरूको, अरुका स्थणता पनि मग्नतामा बदलिदिने क्षमता हुन्छ । कविका एक निश्चित जिन्दगीमा जिन्दगीका अनिश्चितताभित्र देशगत भावनाको निश्चितता छ । हो, परिस्थितिको दास व्यक्ति स्वाभाविक प्रक्रियालाई आफ्ना स्वभावमा ढाल्न खोजिदिन्छ । प्रवृत्तिगत त्यस्तै प्रक्रिया पनि उसका सहज प्रक्रिया बनिदिन्छन् । आखिर व्याकुल विवशताभित्र कवित्व यसरी व्यक्तिन्छ-

क्रिया प्रतिक्रिया लम्पसार परेर

सम्पूर्ण निस्क्रियताबाट सक्रिय बनेर

कवि बैरागी काइँलाको उन्मुक्त भावको 'मातेको मान्छेको भाषण मध्यरातपछिको सडकसित' केही भावनात्मक अनुभूतिका पक्षमा कवि रिजाल पनि सफल देखिन्छन् । कवि काइँलाको तार्किकता रिजालमा पनि छ । कवि काइँलाको स्वच्छन्दतावाद स्वच्छन्दकै छ भने रिजालको अलिक धमिलिएको छ । प्रतीकात्मकतामा पनि कवि रिजाल विश्वास गर्दैनन् र बौद्धिकतामा पनि । यो माटो सबको साभा हो र यहाँका छेक्ने अट्टालिका फुटाउनुपर्छ अनि सम्याउनुपर्छ भन्ने काइँलाको भाषण छ । सुषुप्त वा अचेतन सुताइमा काइँला निराश भएर घच्छ्याउने भाषण दिन्छन् यसरी-

मलाई दुःख लाग्छ

आफैं सुत्थन् गड्यौलाभैं गुजुलिट्टएर

आत्म पराजित मान्छेहरु

धर्तीका अस्वस्थ्यकर घरहरूमा

अनि यति अबेरसम्म ?

यस आलस्यतामा दिन खोजिएको चैतन्य हो । विकारमा दिन खोजिएको संस्कार हो र हो विकृतिमा दिन खोजिएको सभ्यताको विगुल पनि । जुन भन्काइले सजगता सञ्चरण प्रदान गर्न सक्छ समस्तमा । कवि रिजाल पनि अनिश्चित जिन्दगीको विवशता कोट्याउन खोज्छन् एक विकार विरोधी बनेर तलका पङ्क्तिमा-

मलाई थाहा छ

म मेरो मुटुभित्र डुबेर मर्नेछु

मिश्रण उठिरहेछ

र मेरा हात स्वचालित छन् बहना ख्याउनमा

एकलै आफ्लाई ढाडस दिन पुण्ठ विपतिहरूमा  
आफै आफ्नो धैर्य बाँध खोज्छ दुर्घटनाहरूमा  
विवशता जन्माउने बहना कविमा छ र विवशताका अनिश्चित लहरहरूलाई पन्थाउँदै कवि  
कता कता पुण्ठन् । दुर्घटनामा पनि लिनुपर्छ धैर्यको शिक्षामा मुक्तकण्ठ खुलाउने कवि  
आफै पोखरीमा जन्मे सीमितताको विवशतामा देखिँदै यसरी बोल्छन् -

म त फगत पोखरीको एकलो तरिवर शान्त छु  
आफूभरि माछा भएर पनि एकलो  
आफूभरि हल्ला भएर पनि शान्त  
उसिना चामलको पसल अगाडि लाम लागेको हुन्छु  
कहिले सिङ्गै हिमाल बोकेर  
भीड भएर उभिएको हुन्छु कहिले आफूभरि  
आफ्ना नीच चटकहरु स्तब्ध आँखाले हेरेर  
ट्यारेट भाँचिएको गाडी भएर धरापमा  
दुगुर्षु कहिले दुन्मुनी दिन्छु कहिले आफ्नो भविष्य खोजेर  
हो, आफूभरि उल्लास र आँटका उन्मादहरु भएर, आफूभित्रका वेदनात्मक रहमा माछाखैं  
जिजीविषाहरु सत्याङ्गसुलुङ्ग चिल्याएर पनि मान्छे विवश व्यकुलताले रित्तिन सकेको हुन्छ केही  
हदसम्म जुन रिक्त्याइँ कवितामा कवित्वशील हृदयको पोखाइमा छ । उन्मादहरु भएर पनि  
कार्यरूपमा उतार्न नसकदा व्यक्ति साँच्चै व्याकुलताले हलिरहेको हुन्छ । जीवन जीवनदेखि  
नै निरास बनेर आफू आफैबाट वाक्क हुन्छ । प्रकृतिको अनिश्चित प्रक्रियाको एकलो भोगी  
बनेर । यहाँ जिन्दगीको त्यस्तै विवशताका नै विपनाहरु छन् । जिन्दगीका विच्याइमा उराठ  
अवस्थाका अनुभूति कर्ण शैलीमा कवि बगाउँछन् । एउटा उसिना चामलको लाममा पनि  
सगरमाथा बोक्ने भावनाका भार कविमा छन् जति हर राष्ट्रप्रेमी विवशीहरु हुन सक्छन्का  
चित्रण कवितामा छन् । मुटु त सधै भावनैभावनाको सागरमा डुबुल्की मारिरहेको हुन्छ ।  
त्यहाँ व्यक्तिको जीवन सूचीपत्र पनि हराएभैं लाग्न सक्छ, त्यस देशका सीमाङ्गित मुटुका  
धाँजाभित्र । एउटा प्रवासिन विवश दारिद्र्यका बारेमा बिदेसिएका सम्पूर्ण व्यथासँगै बलिँदै  
गएका यात्रु बन्धन् कवि र आफ्नै देशका भन्ज्याङ्गौरालीका बाटाहरूबाट स्मृतिका शृङ्खला  
दुटेको प्रतीति अभासमा आफू आफैमा दुक्रिन्छन् र कवि भन्धन्-

ढोका कुर्दै टिप्पणी उठाउँदै एउटा खोक्रो दारी लिएर  
हाँसो टक्काउँदै, आत्मा बेच्दै, एउटा खोक्रो छाती लिएर  
म वैहोश भएको छु, आफ्ना छिन भिन्न स्मृतिहरूमा  
र म मरी मरी आपूर्लाई सङ्कट खोज्दै बाँचिरहेछु ।

स्रष्टादिल व्यथा, उत्पीडन, छटपटी र विवशतामा पुगी त्यसको मर्मस्पर्शी चित्र खिच्छ र  
अरुसामु प्रस्तुत गर्छ । मनभित्रका रोदन, व्यथा, उन्माद, आशा, प्रेम, विवशता तथा व्याकुलता  
जे जे जीवनमा आइपर्छन् तिनलाई कविले सुन्दर शैलीमा उतारिदिएका छन् यहाँ । लाग्छ,  
यो सङ्ग्रहभरिको सबैभन्दा माथिको 'उतार पना' एउटा निश्चित जिन्दगी । कवि रिजाल  
विशेषत: नेपालकै आवहामा रहन्छन् र यहाँका सात्तिक वा दुर्व्यसन नियालिदिन्छन् । अखबार  
पढ्दाका क्षणमा भने कवि रिजालको परिवेश परिचित्रण अति स्तुत्य छ । विश्वको सेरोफेरोमा  
अत्याधुनिक चालचलन रीतिरिवाज, आदर्श, बिडम्बना, नीति, नियतिजस्ता कुरामा आजका

आदर्शवादी विश्वका परिवेश यथार्थमा अर्के पक्षमा छन् । ती पक्षहरू भनेका नै मुखमा राम राम बगलीमा छुरा हुन् । आजका विश्वमा एक राष्ट्रको अर्का राष्ट्रप्रतिको हेराइ, शङ्कालु पद्धति, शक्ति बढ्पन, जालभेल तथा साम्राज्यवादका रूपमा एकले अर्को देशलाई भए नभएका गालीगलौजका भए नभएका लान्छना थोपरिदिन्छन् जुन कुराको प्रस्तुति उनकै कविताबाट-

एउटा र अर्को राष्ट्रबिच गोली हानाहान  
एक अर्कालाई पहिला युद्ध छेडेको आरोप  
हवाइ हमला, गृहयुद्ध, सीमा उल्लङ्घन  
शैक्षिक क्रान्ति, अतिक्रमण, बिस्फोट  
उपग्रह उडान, रहस्योद्घाटन, अणुपरीक्षण  
आदर्श, दर्शन, उपदेश, भाषण  
सफलता, हत्या, दुर्घटना, विज्ञापन  
भूलसुधार, चमत्कार, व्यापार, गठबन्धन  
हाहाकार, जयजयकार, सूचना खण्डन

पत्रिका पढाइमा पाठकको यथार्थता छ र पत्रिका लेखाइमा पनि । बरु भौतिकी सन्त्रस्त समाज नै निस्सासिएको छ, आफ्नो यो प्रकृति देखेर । यहाँ सत्य, सद्भाव, सहयोग र सद्गुणको खाँचो छ । त्यही खाँचोलाई यथार्थवादी कविको सहारामा दिल्ले देखेको र लेखेको छ । हो, हत्या र बलात्कारजस्ता असात्विकतापूर्ण घटना पढाइका क्रममा हामी आफूभित्रै रिड्गिराखेका हुन्छौं, हामीलाई दुःख लाग्छ आजको विनाशप्रेरित सांसारिक भावना देखेर र उनलाई जरै पत्रिका पढ्दा हामीलाई पनि जाग्ने अनुभूति समेटदै कवि लेख्छन्-

..... मेरा आँखा  
अखबारको मस्झूमिमा हिँडिरहेछन् घसिरहेछन्  
एउटा सत्यको मृगतृष्णा बोकेर  
अखबारमा हिँडिरहेछन् विवश निराश आँखा  
सत्यका चिह्नान चिह्नानहरू टेकेर

सत्यको समयधार पनि समाप्त भइसक्यो । सत्यका नाममा हुरी र प्रोपोगन्डा छ र तिनै फिल्ली फिल्लीका सत्य नकाबमित्र दुष्ट व्यवहारको प्रतिफल छ । धर्तीलाई पनि भार भएको हुन सक्छ । कवि सबै सत्यका ढुकडी बोकेर आउने अयथार्थ सत्यलाई पर्दाबाहिर राखिदिन खोज्छन् । आजको विश्व पनि ठिक त्यस्तै छ । सही निसाफमा कुनै आमाले 'अनिल' र 'अस्त्र'का भगडामा दिएको 'मिलेर खेल्नु'को नियम विश्वमामिलाका इन्साफ मगाइमा संयुक्त राष्ट्र सङ्घको छ । त्यो इन्साफपछि दुई देश भएर (अस्त्र र अनिल) गोली हानाहान गर्छन्, कतै गोलीका आवाजले अरु मर्न सक्छन् त कतै भूमि नै तुवाँलिन सक्छन् बास्तका विषस्वादले । यो वास्तविकता नड्ग्याइमा अखबारप्रति कृतिभित्र कवि भन्दै जान्छन् यस्तो-

अखबार आज म तिमीलाई वरण गर्छु  
चिसो छिँडीको गोदाम मेरो मथिङ्गलको  
छापाखाना चलिरहेछ  
धन्याप् धन्याप् धन्याप्  
छापाखाना भरिरहेछ  
धन्याप् धन्याप् धन्याप्

ले भौतिकी साधनको साध्य नै समाजको 'धन्याप् धन्याप् धन्याप्' भएको छ । त्यसैले छापाखानाले वास्तविकता प्रतिध्वनित गर्छ तृण तृण यही स्वरमा । कवि रिजालको अखबार पढ्दाको क्षण अति यथार्थवादमा पुग्छ । आजका व्यवहार, चालचलन, रीतिरिवाजको सङ्गलो धर्म हो अखबार पढ्दाको क्षण भने वास्तविकता यस्तै विवशताका तीक्ष्ण कुराहरु 'यसपालिको जात्रामा धेरै तुलो बाढी आयो, वस्ती तर उज्जिसकेको र कसैको मुस्कान पाएर' अघि बढेका छन् भने 'यहाँ' र 'देशप्रेम केही उद्गार'चाहिँ बेगलै प्रकारका पारिवेशिक धारमा उभिएका छन् । यहाँमा कविको स्वाधीनताको अत्यधिक अपेक्षा छ । त्यस्तै 'देशप्रेम केही उद्गार'मा भने देशको विकास कसैको ढोड र स्वाङ्ग फुकाइले वास्तविकतापूर्ण सजावट पाउन सक्दैन । यसको साटोमा वास्तविकताको प्रतिस्थापन हुनुपर्छ स्पष्ट अभिव्यञ्जना छ । 'यहाँभित्र धरतीलाई उभिन सक्नेसम्म क्षितिजको भाग चाहिन्छ भन्ने उद्गारमा कवि ओर्लन्छन् यसरी-

सबै जनाले सुनुन्

ए, सङ्क हो !

यौटा मानिस तिमीमाथि हिँड्दै छ

म अटाइन तिम्रो फैलावटमा

यस अर्थ म हुकुम गर्दु

आफै तिमीहरु फटी देऊ, च्यातिदेऊ, फैलिदेऊ

भनेर तुलो हुङ्कारमा भाग्ने कवि बैरागी काइँलाका जस्तै कवि रिजालको आवाज उर्लन्छ यसरी-

आकाशले थिचिरहेछ

क्षितिजले च्यापिरहेछ

आँखामा पट्टी बाँधिएको छ आँखाको

हृदयमा काँडे तार छ मापाको

उड्डै त यो पिञ्जरा जत्रो आकाशमा कहाँ उड्डै

जाऊँ त थालभरिको क्षितिजमा कहाँ जाऊँ

हेराँ त आँखा जत्रो संसारलाई कति हेराँ

खेलाँ त सूर्य ताराको गट्टा पनि कति खेलाँ

भन्दै कुनै स्वाधीनताको उन्मुक्तिमा उड्न चाहन्छन् । फरक यति कि कवि काइँलाको अभिव्यक्ति रिजालको तुलनामा बढी संवेद्य छ । दुवैको माग यहाँका हत्केलाका रेखाजस्ता सङ्कललाई सर्दै अटाउँदै सङ्कजत्रा नै बनाउने, क्षितिजलाई खुला पार्ने, आकाशमा अकञ्चन कल्पका रङ्ग भरिन नदिने तथा आफू पिंजडाको काँडेतारका बारभित्र नबस्ने छ । नभए बाटा रेखाजत्रा, जिन्दगी हत्केलाजत्रा, समुद्र आँसुभन्दा पातला, पर्वत आफूभन्दा होचा यस्ता केका कल्पना र सपना देख्दै गयाँ भने हामी कठपुतली हुने छाँ इसाराका । यस्ता विवशताभित्र सामुद्रिक आशा फिँजाएर हिँड्ने कवि रिजाल कुनै दिन कल्पनाको डुबाइको अनुभव गराँला भनी यसरी छरिन्छन्-

यहाँ मान्छे जन्मनु विस्फोट हुँदो रहेछ

यहाँ भोकालाई पिल्स खान दिइदो रहेछ

.....

.....

आउला अवस्थ्य आउला र खाउला

बरु यो क्षितिजलाई अलि खारिदिनोस्

कवि रिमालजस्तो जुन खराइमा मेरो धर्ती सम्मन उभिन सकछ भन्दै वास्तविकता नियालिदिन्छन् । कविहरू स्वाधीनतामा बाँच्छन्, कविहरू स्वतन्त्रतामा बाँच्छन्, कविहरू समानतामा फुलिदिन्छन् । त्यति मात्र होइन यी सबैका साथमा देशमा लगाइने नारा, भ्रम र भाषणलाई मन पराउँदैनन् । उनीहरू त मात्र देशोन्नतिको वास्तविक भावनामा डुबिदिने चिन्तक हुन्, मन हुन् जसभित्र सही वास्तविकताका छनक हुन्छन् । देशप्रेमसम्बन्धी केही उद्गार यसै तथ्यका साक्ष्य हुन् । यस उद्गारभित्र कवि, नेता, कृषक, शासक, हाकिम, शोषित, शासित सबैलाई आआफ्नै परिवेशमा सुधार गरी देशोन्नतिको चरमोत्कर्षको नारामा उद्घोषित छन् कवि । आदर्श र खोक्रा भावहरूभित्र देशगत विकास हुँदैन, देशविकासको पोसाक पनि हुँदैन र भाषणमा हुँदैन, नारामा हुँदैन, देखावटी, चिह्न, लेखाइ र संस्कारले हुँदैन । यसका लागि अर्के वास्तविकताको सन्मार्ग अपनाउनुपर्छ भनिर्दिँदै भन्छन्-

देशप्रेम त देखिन्न हिमाल र गुराँसमा

न त झ्याल ढोकामा बुट्टा डाँफे मुनालमा

हजारौं गाउँका भुप्रा, छाप्रामा पुग्नुपर्छ

करोडौं ढुकढुकीलाई पहिले बुझ्नुपर्छ ।

हो, चोट नपाई वास्तविक घाउको याद आउन्न । त्यस दर्दको सहभागी बनेपछि मात्र त्यससम्बन्धी दुःख अरुलाई बुझाउन सकिन्छ र बुझाउनुपर्छ । देशप्रेमका नारा दिने ठालुका भाषणमा वैचारिक सङ्घर्ष गर्छन् कवि रिजाल र देशविकास आलिसान महलको भोगविलासबाट वा समाधिमञ्चमा भाउ मिलाइएका भाषणमा हुँदैन, गाउँ गाउँमा प्रत्येकको ढुकढुकी दिनुपर्छ, आर्त पुकार छाम्नुपर्छ, रूपर्छ अनि पो देशप्रेमको उद्गार वास्तविक बन्न पुग्छ । नत्र हामी भार हुन्छौं पृथ्वीलाई । कैयाँ भार सम्हालेर बसेका अरु मानवताले हामीलाई धिक्कार्ने छन्, थुक्ने छन् र आफू आफूमै रूने छन् ती निरीह शोषितहरू । त्यसैले कवि रिजाल भन्छन्-

बजाऊ थपडी साथी ! वा वा क्या भव्य कल्पना

धिक्कार बुद्धिजीवी हो ! अञ्जुलीमा डुबी मर ।

अरुलाई उडाउने, आफू मात्र हाँस्ने, अरुलाई रुचाएर तिम्रो मूल्य नै कति छ समाजमा ? तिमी भार भइरहेका छौ हाम्रो अनि धरतिको । अतः तिमीजस्ता नपुङ्सक, उपयोगिताविहीन व्यक्ति अञ्जुलीको पानीजस्तो छिपिपाइमै भरिदेउका भावमा कवि बोल्छन्-

आफै लेख जथाभावी आफै भट्याऊ मरख्ब भै

आफै हाँस कुरा गर्दै आफै सन्कर दिवक भै ।

धनी शहरिया टाढा कसैले त बुझे पुग्यो

ढाक्रे भुम्बे छ यो वास वास्ता नै आज गर्छ को ??

भन्दै वास्तविक कविताको लेखनीय पक्ष देखाउँदै भन्छन् कवि अझ-

हावा कागजमा हैन माटोमा कविता गर

कोदालीले डिका देउ कुलोले भावना भर ।

नयाँ खाँद नयाँ वीज प्रयोग गर खेतमा

नयाँ अर्थ नयाँ मूल्य देउ रङ्ग हरितमा ॥

हो, कवि/साहित्यकारको मौन उत्कण्ठा त्यतै अभिप्रेरित भएको हुनुपर्छ । बल्ल पो हरित रङ्गको

वासन्तीपूर्ण वासनामय विकास देशको हुन्छ । कोरा भाषणले हुँदैन । कवि/साहित्यकारहरू भावनामा डुबुल्की मार्ने गर्छन् । त्यसको वास्तविकता पहिल्याइदिनदामा देशको विकासप्रवाहमा गति बढने छ । यसै सन्दर्भमा कविता राष्ट्रियताका ओजपूर्ण भाव बनेर उर्लन्छन् कवि रिजालका सिर्जनामा । एउटा बेकार दिन पनि गयो । आफौलाई पढ या साधारण छ भने आफैनै मृत्युसित दुईचार बात गरौंमा स्मृतिका कुनै भावनाहरूका पृथक्याइमा उदासिन हुनुपर्ने बाध्यता छ । आआफैनै चिह्नानमाथि धिप्प निभ्न आँटेको दियो स्मृतिपूर्ण इच्छापत्रमा अलगिएको आधा आधा आत्माको सामाजिक विडम्बना र नियतिको क्रूर व्यवहारमा मृत्युसँग मधुरिँदै धिप्प भएर दुईचार बात गर्नुपर्ने बाध्यता छ । हो, निसासिँदो यस्तो जीवन आफैनै मलामीजस्तो, शिशिरको पतभडजस्तो, इच्छाहरू पहिल्यै खसिसके पातहरू बनेर । त्यो केवल इच्छाहरूको स्मृति मात्र बाँकी भएको रखलाई खड्गिएको रखलाई वसन्तको वास्ता नभएरै आफू आफूमै वितृष्णामा पुगेका हुन्छन्-

विवशता छ शवयात्राको

एउटा शवयात्रा जस्तो भयो

हाम्रो वसन्त

एउटा रुद्धाबासी जस्तो भयो

हाम्रो फूलबारी

सायद ती इच्छाहरू नै थिए

जो पातरै भरेर गए

सायद ती सपनाहरू थिए

जो फक्रनै नपाई ओइलाएर गए ।

प्रेमात्मक विहवलताको स्पष्ट चित्रण र सामाजिक परिवेशको नडग्याङ्क कवि रिजाल गर्छन् । सायद भनेका छन् जीवन उन्मुक्तताको आकाशमा डुल्न प्रेमी शैलीको प्रवाह पनि स्वेच्छित होस् जुन प्रवाहको पखेटा हो । 'थिचेर राखेको छुमा सानो विवशता फैलिएको जिन्दगीको विनाश छ भने 'स्वदेश गौरव'मा वैचारिक उच्चता छ । 'स्वदेश गौरव'का लागि सिमानामै सीमित नै पर्दैन, भावनात्मक सिमाना हाम्रो हृदयमा अन्तै भए पनि हुन सक्छ तर हाम्रो अस्तित्व नरहेमा वा हामी नीचतामा रहे तोप र ट्रेन्चले देश बनाउन सक्दैन । त्यो सिमानाको भौतिकी रक्षा प्रक्रिया हो, वास्तविकता त

तिमी हामी बेचिइसकेपछि

देशले बेची रहनुपर्दैन

सार्वभौमिकता र देशको स्वतन्त्रता

नक्साहरूको रेखाभित्र होइन

त्यस देशका नागरिकहरूका नशाहरू भित्र हुन्छ

अर्को वास्तविकतामा कवि रिजाल सहरको दुर्घटनात्मक चहलपहलको वर्णन गर्छन् । यो हल्ला हल्लाका सुनसान एकान्त सम्झेभैं यसलाई निर्जीव अबोध्य दर्दका सहयात्रीको सहर भनिदिन्छन् र देखिन्छ सहर यस्तो-

दिउँसै हिँड्छन् सुकिला ख्याकहरू

आँखामा यौन लिएर

## कियकरिन्छन् कियकन्नेहरु

सडकमै उत्ताउलिएर ।

यो सहरको अत्याधुनिकताको एक पक्षीय चित्र मात्र हो । यहाँ धेरै धेरै यौनात्मकता लिएर यौनाङ्गनाहरु हिँड्छन् । निरस निरस कृत्रिमतामा हरिलीभरिली बन्छन् । सडकको सन्नाटामा अर्का थरी ख्याकहरुका सुकिला प्रेमात्मकता होइनन् यौनात्मक कसिला अभिनयका बीभत्सता देखाउँछन् अनि लाग्छ कुनै कोमलात्मालाई घृणा पात्र हुन् दुर्व्यसनका, बत्ती नै बत्तीका अन्धकारसँगै शोभा नै शोभाका कृत्रिमतामा गाउँका प्रवृत्तिसँग प्रतियोगिता गर्न सकेको जस्तो । यसै दृश्यमा कवि सोच्छन्-

सायद घर घरमाथि घोडा चढेपछि शहर बन्छ

र मान्छे मान्छेमाथि बुझ चढेपछि शहरिया बन्छ ।

वास्तविक चालाको चित्रपट सहसा निर्भीक रूपमा उतार्ने कविहरुका आफ्नै विशेषता छन् । भिन्न विशेषता बनाउने दरो चुरो नै प्रतिभा हो । फेरि साना विषयवस्तुलाई पनि गतिला दृष्टिले व्यापकता प्रदान गर्न सक्ने क्षमता पनि कविमा नै रहेको हुन्छ । 'उनी मलाई र एउटा भ्रम प्रणयको' जस्ता कविता सामान्य स्तरभन्दा माथि उठ्न नसकेका लाग्छन् । र पनि वास्तविकताका फिल्का यिनमा प्रशस्त पाउन सकिन्छ । वर्तमानमा सुस्तता छाउँदै गइरहेको र आजको पतन भइरहेको समाजको देखाइ छ । हो, यहाँका जिन्दगीका परिभ्रमण नै यति उराठलाग्दा छन् ती सपनैसपनामा आज नै हराउन सक्छन् । समय पनि आजका कविले भनेजस्तै सतीदेवीको शवयात्रामा अधि अधि बढेखाई देखिन्छ र यक्ष पात्र उदासिन छ । जुन श्रद्धेयहरु आफ्नै आँखाबाट खस्दै विलयी हुँदै गइरहेका सन्दर्भमा कवि भन्छन्-

मलाई हेर्नु छ त्यो अन्तिम थोपा कहाँनिर खस्ने छ

कुन ढुङ्गोमा, कुन कुटोमा र कुन दोबाटोमा

किन भने त्यो अन्तिम थोपा स्वयं म हुने छु

आफूलाई आफ्नै आँखाको अन्तिम श्रद्धाङ्गली !

जिन्दगी नै यस्तै छ । कल्पाइ नै कल्पाइको, त्यो कल्पाइको अन्तिमपना आफ्नो अल्पाई हुन्छ । अरुको दुःखमा आँसु भार्दै गयो आफू विलपित भइदिन्छ एक दिन आँसुकै थोपाई । प्रकृतिको नियमको उदासिनता हो यो प्रयोजना । वादविवादमा भने कविको सानो समीक्षण, चर्चा परिचर्चा छ काठमाडाँको वस्तु विषयक भने नदीलाई हेर्दाहेई कवि नदीमै आफू भावनामा डुबिदिन्छन् एउटा साहित्यको भावनाले । जो जीवनमा अरुको लागि केही गर्छ ऊ अमर बन्छ तर उसको मृत्यु दयनीय बन्छ । जसले अरुलाई हसाउँछ उसको अन्तरात्माभरि घाउ, आर्तनाद र विरहका सुरक्षेत्र मात्र हुन्छन् । ऊ आफूचाहिं आफैभित्र रोएको हुन्छ । ऊ अवहेलित हुन्छ प्रष्टवक्ता भएपछि घोच पर्छ अरुमा, फेरि गिताङ्गेलाई गीतको मनोरञ्जन हुँदैन । यस्तै यस्तै भावहरुको प्रत्यक्ष चित्रण गरिएको भैरवको मृत्युमा वास्तविक भैरवको जीवनशैली छ । यो हेर्दा खालि गानाजस्तो लाग्ला, यो प्रसिद्ध हास्यव्यङ्ग्यकार भैरव अर्यालको वास्तविक जीवन प्रक्रिया हो । ऊ आफूभित्रै जलिरहेको थियो, अरुलाई हँसाउँथ्यो । अरु हाँसे, ऊ रोयो । यसमा साहित्यकारको कदर नभएका क्षणहरु चिन्तक दिन्छन् । साहित्य, संस्कृति त देशका अमूल्य निधि भएकाले साहित्यकारलाई उचित कदर दिइनुपर्छ भन्ने भनाइ कविताले दिन्छ । मरेपछि फूलगुच्छाले प्रतिमा सजाउन सक्नेहरुले जीवितमा त्यसको कदर

गर्न नसक्ने इर्थित स्वार्थी समाजको तस्वीर छ । उनी भन्छन्-

हामीलाई हाँसो दिंदा दिंदा

भैरव आँसुमा डुबेर मन्यो

मरी मरी बाँच्नेको लागि

तिखो व्यङ्ग्य प्रहार गन्यो ।

(साहित्यले साहित्यलाई स्मृतिमा यसरी कदर गरिदिएकामा धेरै कृतज्ञता ज्ञापन कविज्यूमा)

उनको मृत्यु भयो । उनको नाम रहयो । अरु केही भएन तर नेपाली साहित्यले एउटा सम्पत्ति पोखिदियो । समाजले रसिक गुमायो । सन्तानले बाबु गुमाए । श्रीमतीले सिन्दुर गुमाइन् । हुन त साहित्यकारको कदर हामीमा मात्र होइन धेरै ठाउँमा भएको छैन । नोबेल पुरस्कार विजेता सोल्जेनिसिनले नोबेल पुरस्कार पाउँदापाउँदै देश छाड्नुपन्यो । महाकवि किट्सले अर्यालकै जस्तो आत्महत्या गर्नुपन्यो । देवकोटाले अकालमा मर्नुपन्यो ।

‘तुटो आशा चुरोटको भरमा बौद्धिकता छाँट्ने’ देवकोटाजस्तै अर्यालको स्पन्दन कसैले बुझेनन् जीवितामा । त्यसैले उनको लासले पनि व्यङ्ग्य गन्यो रे । उनको लासै

आजको मान्छेको व्यङ्ग्य चित्र जस्तो थियो

आजको मान्छेको व्यङ्ग्य चित्र जस्तो थियो

भैरवको अन्तिम कृति सायद उसकै मृत्यु हो ।

कवि भन्छन्- आजका कैयन् ओठहरूमा पनि भैरवका कलेटी छन्, निधारमा भैरवका रेखाहरू छन्, आँखामा व्यथाहरू छन् जतासुकै भैरवै भैरवका कथाहरू छन् ।

चाँडै नै सम्बन्धितको लोचनाहरू गराउन कवि रिजाल प्रतिकात्मकता अपनाउँछन् । हो, अरुको दुःखमा रुने व्यक्ति जीवन केही देख्दैन, ऊ पनि डुब्न सक्छ जीवनमै, अल्पिन सक्छ शून्यतामै । प्रगतिशीलताका दनकहरू छन् कवि रिजालमा पनि । इतिहासका दयनीय आवाजहरूमा भैरव मात्र होइन उसका सन्तानहरूको पनि दुर्दशा आँल्याएको छ भने ‘के छ र जिन्दगी बिताइदिन्छु’मा आफ्ना माध्यमले सबैलाई जीवनबोधका दनकहरू दिएका छन् । अखिर जिन्दगी हो यस्तै छ । हुन सक्छ कवि रिजालमा यो भनाइ भैरवकै स्मृतिमा पोखिएर कविता बने होलान् भन्ने तर्कको अनुमान गर्न सकिन्छ,

के छ र जिन्दगी बिताइ दिन्छु

कपूरजस्तै हावामा उडाइ दिन्छु

बरफजस्तै घाममा पगली दिन सक्छु

आस्खखडाको फूलजस्तै

सिरिक्क बतास र एक भर पानीमा

सिध्याइदिन्छु ।

भन्दै कवि कवितामा आफूजस्तै निराशामा डुबुल्की मारिदिन्छन् । जिन्दगी तृष्णैतृष्णाको आशैआशा जिजीविषाहरूको उन्मादको उल्लासको खालि रिक्तताकोमा परिणत भएको छ । यसो हुनुको कारण जे होस् कविता व्यक्तिगत धारणामा आफैनै भावना पोखिएमा भए पनि निरासिन छ जीवनदेखि । यो जिन्दगी यति पातलो छ कि नसुतेर सपनैसपना देखेर पनि बिताउन सकिन्छ, अल्छी भएर पनि, मातिएर पनि रोएर पनि जिन्दगी बिताउनु जुनकिरीको पिलपिलाइभैं हराइदिने पार्न सकिन्छ । हिजो र भोलिको कल्पनाको यादमा दिग्दारी र

लाचारीमा परेलीको पातमा टल्किएको पानी पोखिदिन सकिन्छ, कवि यस्तै भनिदिन्छन् । कवि जिन्दगी बिताउनु हो आफ्नै अधिकारले बिताइदिँ भिन्नै भनिदिन्छन् र आफैमा वाष्पित हुन्छन् :

कि त पहाडहरू चुलिएर वादल उडिदिन्छु  
आकाश भुण्डिएर साँझ डुबिदिन्छु  
धुम्मिएर उघिदिन्छु, आफैलाई बिस्कुन सुकाइ दिन्छु  
कि त भने बलेसीमा तप तप तपिदिन्छु  
फिक्रे रखमा एकोहोरो काग काग गरिदिन्छु  
निस्तब्धता बजाइदिन्छु  
कि त भने आफूभरिको फूलदानीमा  
अनुहार सजिइन्छु ।

कविका विचारहरू अस्पष्ट छन् । खालि विश्वको पागलपनामा पोखिएका विहवलतात्मक मनोद्वेलनका भावहरू जस्तै देखिन्छन् स्वरको नवरङ्गमा पनि कवि करै प्रकृतिसँग दाँजिएर, करै करै रहलिएर अनि करै पुगेर स्वरका नवपद्धति अपनाएका छन् । यो मन्त्री पदबाट खुस्केपछि मन्त्रीजीको बिरामीमा अत्याधुनिक मन्त्रीहरूको चालचलनप्रति सरल व्यङ्ग्यात्मक छ । खालि शब्दहरू मात्र आवाजहरूमा अति विवशताको तस्विर र गरिबीको आन्तरिक स्पन्दन छ । गीतकारको रूपमा पनि उत्तिकै प्रतिष्ठित कवि रिजालका अधिकांश गीतमा पनि विवशताका व्यथा नै व्यथा छन् ।

दृष्टान्त :

‘यसै गरी बिताई दिन्छु दुई दिनको जिन्दगी, आँखा छोपी नरोऊ भनी, भरेको पातभैं भयो उजाड मेरो जिन्दगी, गरिबको दुःख पिर आफैसँग हुन्छ, भन्यो जिन्दगी फुट्यो जिन्दगी, आजलाई माया गर भोलिलाई सप्रने छ’ आदिमा कि त अति विवश विघ्नताका सिक्रीका व्यथाहरू छन् चाहे जताबाट होस् कि राष्ट्रियताको अति आस्थापूर्ण जगेन्ना हुन्छ । त्यसैले उनलाई म राष्ट्रियताका कवि भनिदिन्छु । उनीमा कहिले आशा, निराशा, उन्माद, बीभत्सता, प्रगति, विस्कोट, छटपटी, बन्धन आदि हुन्छन् । त्यसैले दुवै पक्षमा जाने आउने सामुद्रिक लहरभैं भएकाले उनमा यथार्थका साथ विसङ्गति छ । उनको शैलिक सुन्दरता अति नै सज्जाहनीय छ ।

कविता कवि समको बौद्धिकता नपाओस्, देवकोटाको सामाजिक उपादेयता यस्तो सम्यता ल्याउन जमर्को गर्छ । कवि कृष्णप्रसाद रिमालको गद्यात्मक पारा कवि माधव धिमिरेको गीति छन्दको समागमता कवितामा छ भने विद्रोहमा रिमालको जस्तो नभए पनि स्तरीयतामा वा सङ्ख्यामा राष्ट्रियताको चिन्तन धिमिरेमा भैं छ ।

## दस्तावेज

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका कुलपति गङ्गाप्रसाद उप्रेती र सदस्य सचिव  
प्रा. जगत्प्रसाद उपाध्याय 'प्रेक्षितांबाट २०७९ असोज २० गते जारी  
गरिएको प्रेस विज्ञप्ति

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान नेपालकै सबैभन्दा पुरानो र उच्च प्राज्ञिक संस्था भएको कुरा सबैलाई अवगत नै छ । महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको जनस्तरको पहल, बालचन्द्र शर्माको राजनीतिक पहुँच र तात्कालिक कवि राजा महेन्द्रको साहित्य, कला आदि वाडमयप्रतिको प्रगाढ अनुरागको प्रतिफलस्वरूप नेपाली भाषा, साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान, दर्शनशास्त्र, सामाजिक शास्त्रलगायतका प्राज्ञिक विधाहरूको समयानुकूल सर्वाङ्गीण विकास, विस्तार, संरक्षण र संवर्द्धन गर्न उद्देश्यले वि.स. २०१४ मा नेपाली साहित्य कला एकेडेमी नामबाट स्थापना भएको र कालक्रममा नेपाल एकेडेमी, रायल नेपाल एकेडेमी, नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान हुँदै हाल नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका नामबाट सञ्चालित यस प्राज्ञिक संस्थाको नेतृत्व नेपाली वाडमयका विभिन्न क्षेत्रमा स्थापित व्यक्तित्वहरूले समय समयमा गर्दै आउनुभएको स्थितिप्रति समेत समस्त प्राज्ञिक जगत् जानकार नै छ । २०६४ सालमा जारी नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान ऐनअनुसार भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शनशास्त्र र सामाजिक शास्त्र गरी ५ ओटा विषयक्षेत्रमा विशिष्टीकृत यो प्रज्ञा-प्रतिष्ठान नेपालको बहुभौगोलिक र बहुप्राकृतिका साथै बहुजातीय, बहुसामाजिक, बहुसांस्कृतिक र बहुभाषिक विशिष्टतालाई केन्द्रमा राखेर प्राज्ञिक गतिविधिका माध्यमबाट नेपालको गैरवलाई राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा स्थापित गर्ने काममा अनवरत क्रियाशील रहेको छ । उपर्युक्त विषयक्षेत्रअन्तर्गत रहेर विभिन्न प्रकारका अध्ययन/अनुसन्धान, अनुवाद, गोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशाला, प्रकाशन आदि कार्यहरू सम्पन्न गर्ने एवम् अनुसन्धान र सिर्जनाका क्षेत्रमा क्रियाशील साधकहरूलाई आफ्नो स्रोत र साधनले भ्याएसम्म सम्मानित र पुरस्कृत गर्ने जिम्मेवारी पनि यस प्राज्ञिक संस्थाले वहन गर्दै आएको छ । यिनै जिम्मेवारीहरूलाई पूरा गर्ने अभिभारासहित ऐन र नियमले निर्दिष्ट गरेको व्यवस्थाअनुसार प्रत्येक ४ वर्षका लागि कुलपति, उपकुलपति, सदस्य सचिव, प्राज्ञ परिषद्का सदस्यहरू र प्राज्ञ सभाका सदस्यहरूको नियुक्ति/मनोनयन माननीय संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्री तथा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका संरक्षकज्यूको संयोजकत्वमा गठित २ जना विज्ञसहितको सिफारिस समितिको सिफारिसमा सम्माननीय प्रधानमन्त्री तथा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका प्रमुख संरक्षकज्यूबाट हुने व्यवस्था रहेको पनि विज्ञ समुदायलाई जानकारी नै छ । यसै सन्दर्भमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका वर्तमान पदाधिकारीहरूमध्ये कुलपति र सदस्य सचिवको नियुक्ति तात्कालिक माननीय संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्री एवम् नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका संरक्षक श्री रवीन्द्र अधिकारीज्यूको संयोजकत्वमा गठित समितिको सिफारिसमा तात्कालिक सम्माननीय प्रधानमन्त्री तथा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका प्रमुख संरक्षक श्री केपी शर्मा ओलीज्यूद्वारा २०७५ असोज २१ गते भएको र उपकुलपति र प्राज्ञ परिषद्का सदस्यहरू तथा प्राज्ञ सभाका सदस्यहरूको नियुक्ति/मनोनयन सोही समितिको सिफारिसमा २०७५ पुस १ गतेका दिन भएको पनि अवगत नै छ । उक्त नियुक्ति/मनोनयनअनुसार कुलपति गङ्गाप्रसाद उप्रेती र सदस्य सचिव प्रा. जगत्प्रसाद उपाध्यायको चार वर्षको कार्यकाल २०७९ असोज २० गतेसम्म रहेको र २०७९ असोज २१ गतेदेखि सकिने एवम् उपकुलपतिलगायत प्राज्ञ परिषद्का सदस्यहरू र प्राज्ञ सभाका सदस्यहरूको कार्यकाल २०७९ मङ्गसिर मसान्तसम्म रहने

र २०७९ पुस १ गतेदेखि सकिने बेहोरासमेत जानकारी गराउँदछौं । यस ४ वर्षको कार्यकालमा विश्वव्यापी महामारीका रूपमा फैलिएको कोरोना भाइरस 'कोभिड-१९' को दुष्प्रभावजन्य प्रतिकूलताका अवस्थामा समेत नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको इतिहासका गैरवपूर्ण उपलब्धिहरूलाई संस्थागत गर्दै वर्तमान नेपालको सङ्घीय गणतन्त्रात्मक लोकतान्त्रिक शासन प्रणालीअनुरूप नीति, योजना र कार्यक्रम तर्जुमासहित उल्लेखनीय प्राज्ञिक, प्रशासनिक/व्यवस्थापकीय तथा भौतिक निर्माण/सुधारसँग सम्बन्धित कार्यहरू गर्न सकिएको बेहोरा सम्बद्ध साधक तथा स्रष्टालगायत सबैमा जानकारी गराउन पाउँदा खुसी लागेको छ । यस अवधिमा सम्पादन गर्न सकिएका केही महत्त्वपूर्ण कार्यहरू निम्नलिखित छन् ।

#### प्राज्ञिक अनुसन्धान तथा प्रकाशन

- ◆ राष्ट्रको प्राज्ञिक आवश्यकतालाई परिपूर्ति गर्ने उद्देश्यले प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा रहेका ११ ओटा विभाग र केन्द्रीय योजनाअन्तर्गत रहेर आ.व. २०७५/७६ मा ५० ओटा, २०७६/७७ मा ८३ ओटा, २०७७/७८ मा ८३ ओटा र २०७८/७९ मा ९३ ओटा गरी चार आर्थिक वर्षमा ३० ९ ओटा विभिन्न विषय क्षेत्रसँग सम्बन्धित प्राज्ञिक अनुसन्धानका कार्यहरू सम्पन्न भएका छन् । चालु आर्थिक वर्ष २०७९/८० को साउन महिनादेखि हालसम्ममा लगभग तीन दर्जन अनुसन्धान प्रक्रिया अगाडि बढेकामा केही सम्पन्नसमेत भइसकेका छन् ।
- ◆ नेपालका विभिन्न मातृभाषाबाट नेपालीमा आई प्रचलनमा रहेका शब्दहरू र नेपाली भाषाका विभिन्न भाषिकाअन्तर्गत प्रचलित शब्दहरूलाई समेत समेटेर १ लाख २८ हजारभन्दा बढी शब्दको 'प्रज्ञा नेपाली बृहत शब्दकोश' (प्रथम संस्करण) तयार गरी प्रकाशन गरिएको छ । देश/विदेशमा रहेका ५५०० भन्दा बढी नेपाली लेखक/कलाकारहरूको परिचय समेटिएको 'लेखक-कलाकार परिचय कोश'का साथै पूर्वको ओलाउचुडगोलादेखि पश्चिमको लिपुलेकसम्मका महत्त्वपूर्ण भौगोलिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, सांस्कृतिक र धार्मिक स्थलहरूसँग सम्बन्धित कलात्मक तस्विरहरू समेटिएको 'तस्विरमा नेपाल' कृति नेपालीमा र 'Nepal in Images' अङ्ग्रेजी भाषामा प्रकाशन भएका छन् ।
- ◆ वर्तमान सङ्घीय गणतन्त्र नेपालका सातओटै प्रदेशको भूगोल र प्रकृतिका साथै व्यहाँको जनजीवन र तिनका भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्त्व, शिक्षा, प्रशासन आदि पक्षहरू समेटिएका अलग अलग सातओटा प्रादेशिक ग्रन्थ र तिनको सारसङ्ख्येपका रूपमा 'नेपाल दर्पण' नामक बृहत् ग्रन्थ निर्माण परियोजनासहित आवश्यक बजेट नेपाल सरकारसँग माग गरिए तापनि विश्वव्यापी महामारीका रूपमा फैलिएको कोरोना भाइरस 'कोभिड-१९' को नियन्त्रणमा राज्यले तुलो लगानी गर्नुपरेको परिस्थितिमा बजेट व्यवस्था हुन नसकेकाले आफ्नै आन्तरिक स्रोतबाट भए पनि मधेस प्रदेशको परिचयात्मक ग्रन्थ 'मधेस दर्पण' तयारीसहित प्रकाशन गर्न सकिएको छ ।
- ◆ प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको स्थापनादेखि विभिन्न कालखण्डमा प्रकाशन भएका तर हाल अप्राप्य अवस्थामा रहेका र आम पाठकहरूबाट माग भइरहेका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थहरूलाई आवश्यकता र औचित्यका आधारमा पुनः प्रकाशन गरिएको छ, जसमा- भरतमुनिको नाटयशास्त्र, अमरकोश, नेपाली निघण्टु, कौटिल्यको अर्थशास्त्र, शुक्रनीति, पूर्वीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य काव्यसिद्धान्त, नेपालका प्राचीन अभिलेख, डिभाइन कमेडी, विश्वसाहित्यको रूपरेखा, नेपाली साहित्यकोश, श्रीमद्वाल्मीकि रामायण (नेपाली भाषा पद्यानुवाद), नेपालनिष्पत्ति, हिन्दु सिद्धान्त ज्यौतिष र ग्रिक सिद्धान्त ज्यौतिषको तुलना, लिच्छवि संवत्को निर्णय, चीनका प्राचीन कथा, चुयाँ (चिनियाँ

नाटक), नेपाली बृहत् शब्दकोश (दस्री संस्करण), आईए. रिचर्ड्सको साहित्यिक सिद्धान्त, एरिस्टोटल र उनको काव्यशास्त्र, जर्ज लुकासको साहित्य सिद्धान्त, नेपाल माहात्म्य, शैली विज्ञान, नेपाली लिपि प्रकाश, नेपालको संस्कृतिका केही पक्ष, नेपालमा बुद्ध धर्म, नेपालको इतिहासका स्वर्णिम पृष्ठ, नेपालको इतिहासका विविध पक्ष, नेपाली अलड़कार परिचय, नेपाली वाङ्मय : केही खोजी केही व्याख्या, माध्यमिक कालीन कवि र कविता, माध्यमिक कालीन नेपाली गद्याख्यान, समको दुःखान्त नाट्यचेतना, संस्कृत साहित्यको सिंहावलोकन, ईशादि नौ उपनिषद, नेपाली मूर्तिकलाको इतिहास, नेपाली धारुमूर्तिकलाको इतिहास, पशुपति प्रत्यभिज्ञा, तन्त्र सर्वस्व, चूडानाथ भट्टारायका पौरस्त्य दर्शनिक कृतिहरू (योगप्रबोध, न्यायप्रदीप, विशेषार्थ सिद्धि, अद्वैतचूडामणि, मीमांसामयूख, दर्शनसम्बन्ध, दर्शनकौस्तुभ र साङ्ख्यविवेक), कन्फेसन्स, जनताको शब्द, आर्य जगत्का महाविभूतिहरू, मुन्मुख, विनियौ साहित्यको दिग्दर्शन, नेपाली जीवनी र आत्मकथाको सैद्धान्तिक तथा ऐतिहासिक विवेचना, नेपाली काव्यमा प्रकृति, सुर्वण प्रभाससूत्र, महाभारत शान्तिपर्व, पञ्चदशी, नेपाली उखानको विषयात्मक अध्ययन, कृषि विज्ञान शब्दकोशलगायत अनेकाँ ग्रन्थहरू छन् ।

- ◆ 'सनातन संस्कृति विश्वकोश', 'नेपाली दर्शन', 'नेपाली महाकाव्यको इतिहास र विश्लेषण', 'प्रज्ञा नेपाली लोककथा' 'नेपाली लोकवार्ताकोश', 'सहिद स्थापत्यकोश', 'नेपाली कविताको प्रादेशिक इतिहास', 'गण्डकीको शिल्पी समुदायका मन्त्रसम्पदा', 'बोद्ध दर्शन : सरल अध्ययन', 'बोटे भाषाको व्याकरण', 'कुसुण्डा भाषाको व्याकरण', 'प्रज्ञा नेपाली समालोचक कोश', 'प्रज्ञा आधुनिक नेपाली कथा कोश', 'प्रज्ञा आधुनिक नेपाली लघुकथा', 'दर्शनबोध', 'मातृभाषाको रूपरेखा भाग १ र २', 'धिमाल भाषाको व्याकरण', 'नेपाली राष्ट्रिय संस्कृतिको विकासमा मगर पुजारीहरूको भूमिका', 'केवरत लोकजीवन', 'वैदिक संस्कृतिमा राष्ट्रवाद', 'गोविन्द भट्टका कविता, 'प्रज्ञा आधुनिक नेपाली प्रतिनिधि गजल', आधुनिक नेपाली छन्दकवितामा युगबोध', समकालीन नेपाली कवितामा युगबोध, समकालीन नेपाली कवितामा समावेशिता, समकालीन नेपाली कवितामा पहिचानको स्वर, 'सर्वार्थ योगवाणी', 'विश्वधर्म' (अनुवाद), 'समकालीन नेपाली कविताको शिल्प', 'काव्य विमर्श २०७७', 'विश्वेश्वरप्रसाद कोइरालाका कविता र प्रवृत्ति', लेखनाथ ज्ञावालीका कविता र काव्य, दाहाल यज्ञनिधिका कविता र गीतहरू, 'प्रज्ञा भोजपुरी कथा', 'प्रज्ञा नेपाली कथा', 'प्रज्ञा नेपाली बाल गजल', 'द भ्वाइस अफ नेपाल', महर्षि याज्ञवल्क्यः' (नेपालीबाट संस्कृत भाषामा अनुवाद), 'भारतीय दर्शनमा के जीवित र के मृत छ ?' (अनुवाद), 'अन्तर्राष्ट्रीय नेपाली कथाहरू', 'नेपाली बालसाहित्यको इतिहास', 'वैदिक साम्यवाद र वैज्ञानिक समाजवादको तुलनात्मक अध्ययन', 'साङ्ख्यदर्शन र मार्क्सवाद', 'उत्तर अमेरिकी नेपाली कविता', 'पुनर्वासपछिका भुटानी नेपाली कविता', 'भारतीय नेपाली कविता', 'नेपाली समालोचना' (हिन्दी अनुवाद), 'मातृभाषा साहित्यको रूपरेखा' (भाग १-३), 'मानवयात्रा : सृष्टिदेखि आर्यहरूको प्रथमा संस्कृतिसम्म', 'प्रज्ञा नेपाली शैक्षणिक व्याकरण', 'अनुवाद सन्दर्भ ग्रन्थ', 'नेपाल-बङ्गलादेश सम्बन्ध', 'द्वन्द्ववाद र पौरस्त्य दर्शन', 'महाभारतकालिक समाज र दर्शन', 'नेपाली समालोचनाको इतिहास', 'दर्शनावली' (भाग ५-९), 'नेपालका जातीय सामाजिक संस्कार' (भाग ५-८), 'लोकसाहित्य सिद्धान्त', 'नेपाली लोकविश्वास', 'सेलेक्टेड चिल्ड्रेन स्टोरिज फ्रम नेपाल', 'डिस्कोर्स अन ट्रान्सलेसन, अनुवाद सिद्धान्त', आधुनिक नेपाली कथामा सामाजिक सम्बन्ध, प्रज्ञा समकालीन नेपाली कथा विमर्श, 'नेपाली लघुकथा र कथाकारहरू', 'नेपाली आख्यानमा शरीरराजनीति', 'महानन्द सापकोटाका कविता', 'गोविन्द भट्टका निबन्धहरू', 'युद्धप्रसाद मिश्रका प्रतिनिधि

कविता', 'नेपाली गीतिकविता', 'प्रज्ञा समकालीन नेपाली समालोचना', 'प्रज्ञा समकालीन नेपाली नियात्रा', 'दलित साहित्यको इतिहास', 'तुरा जातिका लोककथाहरू', 'किराती लोकसाहित्य', 'मगही लोककथा सङ्ग्रह', 'साड्ख्यदर्शनदेखि सत्यहाङ्गमा पन्थसम्म', 'नेपालको दर्शनपरम्परा', 'भानुभक्तको जीवनीका मतान्तरको तुलनात्मक विश्लेषण', 'कर्णालीमा प्रचलित दर्शनपरम्परा', 'रामानुजाचार्यको विशिष्टाद्वैत दर्शन', 'शैव तथा शाकत दर्शन', 'नयराज पन्तका गणितीय चिन्तन', 'कलासिफाइड बिल्डियोग्राफी अफ नेपाली ल्याङ्गवेज एन्ड लिङ्गिस्टिक्स', 'हिटलर र यहुदी (अङ्ग्रेजी अनुवाद), 'हिन्दी कहानी सङ्ग्रह' (नेपाली अनुवाद), 'ध्वनितात्त्विक समालोचना', 'प्रज्ञा उपन्यास विमर्श', 'नेपालमा संस्कृत शिक्षा', 'कर्णाली प्रदेश : विगत र वर्तमान', 'वैदिक यज्ञ र यज्ञपात्र', 'चिनियाँ दर्शन', पौरस्त्य दर्शनको सैद्धान्तिक रूपरेखा'लगायत २५० भन्दा बढी नयाँ अनुसन्धानात्मक कृतिहरू प्रकाशन भएका छन् भने अनेकाँ कृतिहरू प्रकाशनका निर्दित निर्णय भई मुद्रणका क्रममा रहेका छन् ।

- ◆ नेपालमा बोलिने आधा दर्जनभन्दा बढी मातृभाषाका शब्दकोशहरू प्रकाशन भएका छन्; जसमा 'प्रज्ञा-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश' (अद्यावधिकसहित पुनः प्रकाशन), 'प्रज्ञा अवधी-अवधी-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश', 'प्रज्ञा नेपालभाषा-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश' 'भुजेल-नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश', 'प्रज्ञा-तामाङ्ग-अङ्ग्रेजी शब्दकोश' प्रमुख छन् ।

#### पत्रपत्रिका प्रकाशनतर्फ

- » २०७६ सालबाट बालबालिकामा अन्तर्निहित प्रतिभालाई प्रस्फुटन गराउन सहयोग पुग्ने गरी अर्धवार्षिक 'बालप्रज्ञा' पत्रिका प्रकाशन प्रारम्भ गरिएको छ र यसलाई निरन्तरता दिइएको छ ।
- » अर्धवार्षिक शोधपत्रिकाका रूपमा प्रकाशन गरिएँदै आएको 'प्रज्ञा' लाई २०७६ देखि विज्ञसमीक्षित शोधपत्रिकाका रूपमा स्तरोन्नति गरी प्रकाशनमा नियमिता दिइएको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट अङ्ग्रेजी भाषामा प्रकाशन हुँदै आएको Journal of Nepalese Literature, Art and Culture लाई नाम परिवर्तन गरी Journal of Nepalese Studies बनाइएको छ र यसलाई समेत Peer-reviewed journal का रूपमा प्रकाशन प्रारम्भ गरी निरन्तरता दिइएको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट त्रैमासिक रूपमा प्रकाशन हुने गरेको समाचारप्रधान पत्रिका 'प्रज्ञा गतिविधिलाई प्रज्ञासंवाद स्तम्भ र सम्पादकीय स्तम्भ थप गरेर गुणस्तरीय तुल्याइएको छ र त्यसलाई निरन्तरता दिइएको छ ।
- » गद्यप्रधान त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका 'समकालीन साहित्य', पद्यप्रधान चौमासिक साहित्यिक पत्रिका 'कविता', बहुभाषिक अर्धवार्षिक पत्रिका 'सयपत्री', नेपाल भाषाको अर्धवार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'थायभु', मैथिली भाषाको वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'आडन', लिम्बु भाषाको वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'फक्ताङ्गलुङ्ग', नेपाली, हिन्दी र अङ्ग्रेजी भाषाको अनुवादमूलक वार्षिक पत्रिका 'रूपान्तरण' र भोजपुरी भाषाको वार्षिक साहित्यिक पत्रिका 'महुआ' नियमित रूपमा प्रकाशन भएका छन् ।

अन्तर्राष्ट्रिय सम्बन्ध, सांस्कृतिक आदान-प्रदान र अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलन तथा गोष्ठी

- » चीन, भारत, बङ्गलादेश, पाकिस्तान, इजरायललगायतका देशहरूका प्रज्ञा-प्रतिष्ठान/लेखक सङ्घहरूसँग दुई पक्षीय सम्बन्ध कायम गरी पारस्परिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यको थालनी गरिएको छ ।

- » विश्वका ५० भन्दा बढी देशहरूसँगको प्राज्ञिक सहकार्यका लागि सम्बन्ध विस्तार गर्न उद्देश्यले स्थापना गरिएको 'लिटरेरी नेटवर्क' अफ बिआरआई (एलएमबिआर) अन्तर्राष्ट्रिय संस्थाको सहसंस्थापकका रूपमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आबद्ध रहेको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको आयोजनामा २०७५ कार्तिकमा त्रिविवरीय 'नेपाल-चीन संस्कृति प्रवर्द्धन, अनुवाद तथा प्रकाशनसम्बन्धी काठमाडौं सम्मेलन' र २०७६ असोजमा साताव्यापी 'चीन तथा दक्षिण एसिया दोस्रो साहित्य सम्मेलन' भव्यतापूर्वक सम्पन्न गरिएका छन् ।
- » पाकिस्तानको इस्लामावादमा पाकिस्तान एकेडेमी अफ लेटर्सको आयोजनामा सन् २०१९ मा सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रिय सम्मेलनमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका तर्फबाट प्रतिनिधित्व भएको छ भने सन् २०२० को जनवरीमा इजरायलको तेलअबिबमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान र हिन्दु राइटर्स एसोसिएसनबिच द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान सम्पौतामा हस्ताक्षर भएको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले चिनियाँ साहित्यबाट उत्कृष्ट चिनियाँ कथा र समकालीन चिनियाँ कविता, पाकिस्तानी साहित्यबाट पाकिस्तानी महिला लेखन, बड्गलादेशका बड्गबन्धुका जेलडायरी, बड्गबन्धुका अधुरा संस्मरणहरू, एसियाका विभिन्न देशका कविताहरू आदिको नेपाली अनुवाद गरी प्रकाशन गरेको छ भने विभिन्न देशका समकक्षी प्रतिष्ठानहरूले नेपालका १३५ जनाभन्दा बढी कविका कविताहरू समेटिएको The Voice of Nepal कृतिको चिनियाँ, उर्दु, बड्गाली आदि भाषामा अनुवादसहित प्रकाशन गरेका छन् । यी कार्यबाट नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान र समान स्तरका वैदेशिक प्राज्ञिक संस्थाहरूका बिचको सम्बन्ध थप प्रगाढ बनेको छ ।
- » विश्वभर छरिएर रहेका नेपाली भाषी साधकहरूलाई केन्द्रमा राखेर 'अन्तरदेशीय नेपाली कथा', 'उत्तर अमेरिकी नेपाली कविता', 'पुनर्वासपछिका भुटानी नेपाली कविता', 'भारतीय नेपाली कविता', 'युद्धबन्दी गोर्खालीका लोकभाका र कथा' जस्ता कृतिहरू प्रकाशन गरिएका छन् । यसबाट भौगोलिक दृष्टिले अलग अलग सीमामा बाँधिएका नेपालीहरूका बिचमा भावनात्मक एकतालाई संवर्धन गर्न टेवा पुगेको महसुस गरिएको छ ।
- » गैरआवासीय नेपाली सङ्घ (एनआरएनए) को भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति विभाग, अन्तर्राष्ट्रिय नेपाली साहित्य समाज, विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घलगायतका विभिन्न साहित्यिक सङ्घसंस्थाहरूसँगको सहकार्यमा विश्वभरि छरिएका नेपाली साधकहरूलाई जोडेर अन्तर्राष्ट्रिय स्तरका विभिन्न कार्यक्रमहरू गर्ने परम्परालाई निरन्तरता दिइएको छ ।

### राष्ट्रिय स्तरका विभिन्न गोष्ठी, सम्मेलन र कार्यशाला

- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले आर्थिक वर्ष २०७५/७६ मा ८७ ओटा, २०७६/७७ मा ५१ ओटा, २०७७/७८ मा ३६ ओटा र २०७८/७९ मा ५२ ओटा गरी चार वर्षमा काठमाडौं उपत्यकाका साथै देशका विभिन्न ठाउँमा २२६ ओटा गोष्ठी/सम्मेलन र कार्यशाला सम्पन्न गरेको छ । यीमध्ये २०७५ सालमा दैलेखको दुल्लुमा 'बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी' र दुल्लु सांस्कृतिक महोत्सव, भापाको दमकमा 'प्रदेश नं १ स्तरीय बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी', २०७६ सालमा लालबन्दीमा 'प्रदेश नं २ स्तरीय बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी', २०७६ सालमा नै सुर्खेतमा 'कर्णाली प्रदेश स्तरीय बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी', २०७७ सालमा नेपालगञ्जमा 'लुम्बिनी प्रदेश स्तरीय बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी', २०७८ सालमा विराटनगरमा 'प्रदेश नं १ स्तरीय बृहत् वाड्मय सङ्गोष्ठी', २०७९ सालमा मुस्ताङको कोबाडमा 'मुस्ताङ वाड्मय सङ्गोष्ठी' जस्ता विशेष गोष्ठीहरू मुख्य छन् ।

- » नेपालमा विधिवत् स्थापना भई सञ्चालनमा रहेका भाषा, साहित्य, संस्कृति, दर्शनशास्त्र र सामाजिक शास्त्रसँग सम्बद्ध संस्थाहरूसँग सहकार्य गर्ने नीतिअनुरूप यस अवधिमा समेत प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले विभिन्न क्षेत्रमा विचार-गोष्ठीलगायतका कार्यक्रमहरू गरेको छ । हरेक वर्ष मातृभाषा दिवसका दिन भाषा आयोग र युनेस्कोसँगको सहकार्यमा मातृभाषासम्बन्धी विचारगोष्ठी तथा मातृभाषा कविता महोत्सव सम्पन्न गरिएका छन् ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको वार्षिकोत्सवका अवसरमा आयोजना हुने राष्ट्रिय कविता महोत्सवलाई थप व्यवस्थित बनाइएको छ । प्रज्ञा गजल महोत्सवको थाली गरिएको छ ।
- » भानु जयन्ती, मोती जयन्ती, देवकोटा जयन्ती, लेखनाथ जयन्ती, सम जयन्तीका साथै विभिन्न अन्य स्मष्टाहरूको जन्मजयन्तीलाई औपचारिक कार्यक्रम गरेर मनाउने परम्परालाई थप प्रभावकारी बनाउँदै निरन्तरता दिइएको छ ।
- » अन्तर्राष्ट्रिय दर्शन दिवस र विश्व कविता दिवसलाई क्रमशः विचार-गोष्ठी तथा काव्य-गोष्ठी आयोजना गरेर भव्यतापूर्वक मनाउने परम्परालाई अगाडि बढाइएको छ ।
- प्रशासनिक/व्यवस्थापकीय सुधार**
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका प्रशासनिक तथा व्यवस्थापकीय कामकारवाहीलाई थप व्यवस्थित, पारदर्शी र प्रभावकारी तुल्याउन निम्नानुसारका कार्यहरू गरिएका छन् :
- » 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कलाकार तथा कर्मचारी सेवासम्बन्धी नियमावली-२०६७' लाई निजामती सेवा नियमावलीसँग तालमेल हुने गरी 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कलाकार तथा कर्मचारी सेवासम्बन्धी (पाँचौं संशोधन) नियमावली-२०७७' निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ ।
- » 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आर्थिक प्रशासनसम्बन्धी नियमावली-२०६७' लाई नेपाल सरकारको सार्वजनिक खरिद ऐन र नियमावली तथा आर्थिक कार्यविधिसँग तादात्प्य रहने गरी 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान आर्थिक प्रशासनसम्बन्धी (तेस्रो संशोधन) नियमावली-२०७७' निर्माण गरेर कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ ।
- » 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान प्रज्ञा पुरस्कार मापदण्ड तथा कार्यविधि-२०६९' र 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान मानार्थ प्राज्ञ सदस्यता एवम् आजीवन सदस्यता प्रदान गर्नेसम्बन्धी मापदण्ड तथा कार्यविधि-२०६९' लाई समयसापेक्ष संशोधन गरेर अद्यावधिक गरिएको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान सेवाका कलाकार तथा कर्मचारीहरूका पदनाम, श्रेणी, सेवा/समूह र आवश्यक न्यूनतम शैक्षिक योग्यताको निर्धारण गरी नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कलाकार तथा कर्मचारी सेवासम्बन्धी (पाँचौं संशोधन) नियमावली २०७७ को अनुसूचीमा समावेश गरिएको छ ।
- » 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कारसम्बन्धी कार्यविधि-२०७८' तर्जुमा गरी प्रत्येक वर्ष नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा कार्यरत कलाकार तथा कर्मचारीहरूमध्ये उत्कृष्ट ठहरिएका एक जनालाई पुरस्कृत गर्ने परम्परा प्रारम्भ गरिएको छ ।
- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान सेवाका कुनै पनि पदहरू रिक्त हुनेवितकै सेवा आयोगमार्फत पूर्ण गर्ने प्रक्रियालाई प्रभावकारी तुल्याइएको छ ।
- » देश/विदेशमा रहेका नेपाली लेखक/साहित्यकारहरूलाई परिचय-पत्र प्रदान गर्ने उद्देश्यले 'नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान लेखक/साहित्यकार परिचय-पत्रसम्बन्धी कार्यविधि-२०७७' निर्माण गरी कार्यान्वयनमा ल्याइएको छ ।

- » नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका आजीवन सदस्य तथा मानार्थ प्राज्ञ सदस्यहरूले स्वास्थ्यले साथ दिएसम्म वर्षमा कस्तीमा एउटा कृति लेखेर प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा बुभाउनुपर्न वा दुईओटा प्रवचन वा विचार-गोष्ठीमा अवधारणा-पत्र प्रस्तुत गर्नुपर्ने कानुनी व्यवस्था प्रारम्भ गरिएको छ ।
- » श्रेणीविहीन कर्मचारी भर्ना गर्दा समेत विज्ञापन गरेर परीक्षा लिई छनोट गर्ने प्रक्रिया प्रारम्भ गरिएको छ ।

#### भौतिक विकास तथा निर्माणतर्फ

- » २०१९ सालमा निर्माण प्रारम्भ भई २०२७ सालमा सम्पन्नतासहित समुद्घाटन भएको र २०७२ सालको भूकम्पले क्षति पुन्याएको प्रज्ञा भवनलाई रेट्रोफिटिङ (प्रबलीकरण) गर्ने कार्य सम्पन्न गरिएको छ ।
- » प्रज्ञा परिसरमा रहेको प्रज्ञा पुस्तकालय भवन परिसरमा कविशिरोमणि लेखनाथ पौड्याल र महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको प्रतिमा स्थापना गरिएको छ ।
- » नेपाली साहित्यका विराट् प्रतिभा, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका परिकल्पनाकार एवम् संस्थापक सदस्य महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको काठमाडौँको मैतीदेवीस्थित घर (कविकुञ्ज) र उक्त घरले चर्चेको बाह्र आना एक दाम जग्गा नेपाल सरकारको सहयोगमा गुठी संस्थानको स्वामित्व यथावत् कायम रहने गरी हक्मोग नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानअन्तर्गत ल्याइएकोमा उक्त कविकुञ्जलाई सबलीकरण गर्न सकिने/नसकिने सम्बन्धमा विशेषज्ञ प्राविधिकहरूको समिति गठन गरिएको र उक्त समितिले सो घर अत्यन्त जीर्ण भएकाले सबलीकरण गर्न नसकिने बरू उक्त घरको स्वरूप जस्ताको तस्तै रहने गरी पुनर्निर्माण गर्नुपर्ने रायसहितको प्रतिवेदन दिएबमोजिम सम्मानित सर्वोच्च अदालतको आदेश र पुरातत्त्व विभागको समन्वय र परामर्शमा साबिकको कविकुञ्जको स्वरूप दुरुस्त आउने गरी महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा सङ्ग्रहालयको निर्माण सम्पन्न गरिएको छ । नेपाल सरकारको आर्थिक सहयोगमा उक्त सङ्ग्रहालय निर्माणका लागि खुला प्रतिस्पर्धामार्फत छनोट भएको ठेकेदार कम्पनी बिकार्ड-एम.के.जे.भी.सँग २०७८ साउन १२ गते रु ७,११,७२,३१४/४३ (अक्षरेपि सात करोड एघार लाख बहतर हजार तीन सय चौरानबे रुपियाँ र त्रिचालिस पैसा मात्र) मा निर्माण सम्झौता भएकोमा उक्त सम्झौताअनुसारको निर्माण कार्य रु ५,४६,०४,७१४/१२ (अक्षरेपि पाँच करोड छयालिस लाख चार हजार सात सय चौध रुपियाँ र पैसा बाह्र मात्र) मा सम्पन्न गरिएको छ र उक्त सङ्ग्रहालयको समुद्घाटनसमेत यही २०७९ असोज १४ गते शुक्रवारका दिन गरिसकिएको छ ।
- » प्रज्ञा परिसरमा लगभग ६ दशक अगाडि बनेका र लामो समयदेखि जीर्ण अवस्थामा रहेका ग्यारेजलाई जीर्णोद्धार र मर्मतसम्भार गरी पुस्तक विक्रीकक्ष तथा विभिन्न प्रशासनिक कक्षहरू सञ्चालन गर्न सकिने गरेर तिनको सञ्चालन गरिएको छ ।
- » प्रज्ञा भवनको वरिपरि रहेका बाँचा, फूलबारी, डबली, पोखरी र त्यसमा पानीको फोहोरा, सष्टाहरूका प्रतिमास्थलमा चौतारो निर्माण र पेटी निर्माण आदि कार्य सम्पन्न गरिएका छन् ।
- » प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा रहेका विभिन्न प्रवचन कक्ष तथा सभाकक्षहरूलाई सष्टाहरूका नाममा नामकरण गरी प्रवचन कक्ष-१ लाई 'लेखनाथ प्रवचन कक्ष', प्रवचन कक्ष-२ लाई 'पारिजात प्रवचन कक्ष', प्रदर्शनी कक्षलाई 'भानुभक्त कक्ष', पुरानो पुस्तकालय कक्षलाई 'देवकोटा सभाकक्ष', नयाँ पुस्तकालय कक्षलाई 'सिद्धिचरण सभाकक्ष' र ठुलो प्रेक्षालयलाई 'प्रज्ञा सम प्रेक्षालय' नामकरण गरिएको छ र ठुलो प्रेक्षालयको बाल्कोनीसहितको सिटसङ्ख्या १३२३

कायम गरी प्रविधिमैत्री एवम् वातानुकूलित बनाइएको छ ।

» प्रज्ञा छापाखानालाई अत्याधुनिक, व्यवस्थित र सुविधासम्पन्न बनाइएको छ ।

साहित्यिक पत्रिका सहयोग र राष्ट्रिय प्रतिभा उपचार सहयोग

» नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानअन्तर्गत सञ्चालित साहित्यिक पत्रिका सहयोग कोषका नाममा जम्मा भएको मूल पुँजीको व्याजबाट प्रत्येक वर्ष देशभरिबाट प्रकाशन भएका साहित्यिक पत्रिकाहरूबाट दरखास्त आह्वान गरी उनीहरूको निरन्तरता र गुणस्तरीयताको मूल्यांकनका आधारमा वर्गीकरण गरी सहयोग उपलब्ध गराउने कामलाई निरन्तरता दिइएको छ । यसअन्तर्गत २०७४ सालका लागि ५० ओटा, २०७५ सालका लागि ५७ ओटा, आर्थिक वर्ष २०७६/७७ का लागि ३३ ओटा र आर्थिक वर्ष २०७७/७८ का लागि ५८ ओटा साहित्यिक पत्रिकाहरूलाई सहयोग उपलब्ध गराइएको छ ।

» नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानअन्तर्गत सञ्चालित राष्ट्रिय प्रतिभा उपचार सहयोग कोषका नाममा जम्मा भएको मूल पुँजीको व्याजबाट प्रत्येक वर्ष देशका विशिष्ट साधकहरूलाई राष्ट्रिय प्रतिभा उपचार सहयोग कोष सञ्चालन कार्यविधिका आधारमा उपचारका लागि आर्थिक सहयोग गर्ने कामलाई निरन्तरता दिइएको छ । यसअन्तर्गत आर्थिक वर्ष ०७५/७६ मा २४ जना, आर्थिक वर्ष ०७६/७७ मा ९ जना, आर्थिक वर्ष ०७७/७८ मा २२ जना गरी जम्मा ५५ जना लेखक तथा कलाकारहरूलाई उपचारार्थ आर्थिक सहयोग उपलब्ध गराइएको छ ।

प्रज्ञा-प्रतिष्ठानलाई प्रविधिमैत्री बनाउन गरिएका काम

» 'नेपाली बृहत् शब्दकोश'लाई मोबाइल एपमा राख्येर विश्वभर पुन्याउने कार्य सम्पन्न भई दुई लाखभन्दा बढीले उक्त शब्दकोश डाउनलोड गरी लाभ लिइरहेका छन् भने 'प्रज्ञा नेपाली बृहत् शब्दकोश'लाई पनि एपमा लैजाने कार्यको थालनी गरिएको छ ।

नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको वेबसाइटलाई पुनर्निर्माण गरी [www.nepalacademy.org.np](http://www.nepalacademy.org.np) लाई [www.nepalacademy.gov.np](http://www.nepalacademy.gov.np) मा परिवर्तन गरिएको छ । पुनर्निर्माण गरिएको वेबसाइटमा अनलाइन लाइब्रेरी, अनलाइन सभाकक्ष आरक्षण र भाडा रकम भुक्तानी, प्रज्ञा समाचार पोर्टल आदि रहने व्यवस्था गरिएको छ भने नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको आफ्नै फेसबुक पेज र युट्युब च्यानल सञ्चालन गरिएका छन् । त्यस्तै अनलाइनबाट नै प्रज्ञाका पुस्तक तथा पत्रिकाहरू खरिद गर्न मिल्ने गरी नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान इ-बुक एप सञ्चालनमा ल्याइसिकिएको छ ।

प्रज्ञा नेपाली बृहत् शब्दकोश, 'नेपाली बृहत् शब्दकोश', 'नेपाली-अङ्ग्रेजी शब्दकोश' तथा विभिन्न मातृभाषाका शब्दकोशहरूलाई राख्न मिल्ने एकीकृत डाटाबेसको निर्माण गरिएको छ ।

लेखक/साहित्यकार परिचय-पत्र वितरण र विभिन्न प्रज्ञा पुरस्कारहरूको स्थापना

» नेपाली भाषा तथा मातृभाषामा कलम चलाउने सम्पूर्ण लेखक तथा साहित्यकारहरूलाई परिचय-पत्र दिने कार्यको थालनी गरिएको छ ।

» नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले प्रदान गर्ने पृथ्वी प्रज्ञा पुरस्कार, नेपाल प्रज्ञा नेपाली साहित्य पुरस्कार, नेपाल प्रज्ञा मातृभाषा साहित्य पुरस्कार (पहाडी/हिमाली र तराई/मधेस) लगायतका पुरस्कारहरूलाई यथावत् राखी नेपालको राष्ट्रिय गौरवलाई अन्तर्राष्ट्रिय स्तरमा फैलाउन विशिष्ट योगदान गरेका विदेशी साधकहरूमध्येबाट प्रत्येक ३ वर्षमा एक जनालाई तीन हजार अमेरिकी डलरबाटरको रकमसहित प्रदान गर्ने गरी नेपाल प्रज्ञालङ्कार, नेपालबाहिर रहेर नेपाली साहित्यको श्रीवृद्धिमा विशिष्ट योगदान गरेका साधकहरूमध्येबाट प्रत्येक २ वर्षमा एक जनालाई दुई लाख नेपाली स्पिरिंसहित प्रदान गर्ने गरी भानुप्रज्ञा अन्तरदेशीय नेपाली

साहित्य पुरस्कार, नेपाली भाषामा लिखित वाड्मयलाई नेपालका मातृभाषा र अन्तर्राष्ट्रिय भाषामा लिखित वाड्मयलाई नेपाली भाषामा अनुवाद गरी विशिष्ट योगदान गरेको साधकहरूमध्येबाट प्रत्येक २ वर्षमा १ जनालाई दुई लाख रकमसहित प्रदान गर्ने गरी नेपाल प्रज्ञा अनुवाद पुरस्कार नयाँ पुरस्कारका रूपमा थप गरिएका छन् । साथै संस्कृति, दर्शनशास्त्र र सामाजिक शास्त्र विषयक्षेत्रका लागि एउटा मात्र पुरस्कारको व्यवस्था भएकोमा २०७९ देखि अलग अलग प्रदान गर्ने गरी नेपाल प्रज्ञा संस्कृति पुरस्कार, नेपाल प्रज्ञा दर्शनशास्त्र पुरस्कार र नेपाल प्रज्ञा सामाजिक शास्त्र पुरस्कार स्थापना गरिएका छन् । यी सबै पुरस्कार २०७९ सालसम्मका लागि तत् तत् क्षेत्रका साधकहरूलाई नियमानुसार प्रदानसमेत गरिसकिएका छन् । पृथ्वी प्रज्ञा पुरस्कारको राशि चार लाखबाट वृद्धि गरेर पाँच लाख पुन्याइएको छ । साथै राष्ट्रिय कविता महोत्सव पुरस्कारको राशिसमेत वृद्धि गरी प्रथम, द्वितीय र तृतीय स्थान प्राप्त गर्ने कविहरूलाई क्रमशः पचास हजार, चालिस हजार र तिस हजार पुन्याइएको छ ।

अन्त्यमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यक्रमहरूमा आफ्नो विशिष्ट समय उपलब्ध गराई हामीलाई कृतार्थ तुल्याउनुहुने सम्माननीय राष्ट्रपति श्रीमती विद्यादेवी भण्डारीज्यू एवम् सम्माननीय उपराष्ट्रपति श्री नन्दबहादुर पुनज्यूपति हामी कृतज्ञता व्यक्त गर्दछौं । नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको प्राङ्गिक र प्रशासनिक/व्यवस्थापकीय अभिभावासहितको पदीय जिम्मेवारी प्रदान गर्ने तात्कालिक सम्माननीय प्रधानमन्त्री एवम् नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका प्रमुख संरक्षक श्री केपी शर्मा ओलीज्यू तथा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका सभा, वार्षिक उत्सव, भानुजयन्तीलगायतका कार्यक्रममा सशरीर सम्पुर्णितसहित प्रज्ञा-प्रतिष्ठानलाई अपुग बजेट उपलब्ध गराएर सहयोग गर्नुहुने वर्तमान सम्माननीय प्रधानमन्त्री एवम् नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका प्रमुख संरक्षक श्री शेरबहादुर देउवाज्यूपति पनि हामी आभार प्रकट गर्दछौं । हामीलाई नियुक्ति/मनोनयनका लागि सिफारिस गर्ने तात्कालिक संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्री श्री रवीन्द्र अधिकारीज्यूपति हार्दिक श्रद्धाङ्गलिसहित कृतज्ञता जाहेर गर्दछौं । २०७५ सालदेखि २०७९ को अवधिमा संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयको नेतृत्व सम्हाल्नुभएका तात्कालिक र वर्तमान मन्त्रीज्यूहरूलगायत राष्ट्रिय योजना आयोगका संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयका सचिवज्यूहरू, महाशाखा प्रमुखज्यूहरूलगायत कर्मचारीहरू, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका पूर्व पदाधिकारीहरू, आजीवन सदस्यहरू, मानार्थ प्राज्ञ सदस्यहरू, विभिन्न सञ्चालन सम्बद्ध लेखक साहित्यकारहरू, स्वतन्त्र लेखकहरू, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका गतिविधिहरूलाई प्राथमिकताका साथ जनसमक्ष सम्प्रेषण गरी सहयोग गर्ने विभिन्न श्रव्य-दृश्य र छापा सञ्चार माध्यम एवम् तीसँग सम्बद्ध सञ्चारकर्मी मित्रहरू, नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठानका सबै तहका कर्मचारीहरू, सुरक्षाकर्मीहरूलगायत सम्पूर्णमा नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान प्राज्ञ परिषद् र प्राज्ञ समाका तर्फबाट हार्दिक धन्यवाद प्रकट गर्दछौं ।

कुलपति गड्गाप्रसाद उप्रेती र सदस्य सचिव प्रा. जगत्प्रसाद उपाध्यायको कार्यकाल सकिएकै मितिदेखि उपकुलपतिलगायत प्राज्ञ परिषद्का अन्य सदस्यहरू र सभाका सदस्यहरूको कार्यकाल नियमानुसार कायम रहने अवधि २०७९ मङ्गलिर मासान्तसम्म अर्को नियुक्ति नभएको अवस्थामा निमित्त कुलपतिका रूपमा डा. जगमान गुरुडलाई र निमित्त सदस्य सचिवका रूपमा प्राज्ञ परिषद् सदस्य प्रा. डा. हेमनाथ पौडेललाई क्रमशः कुलपतिले र सदस्य सचिवले गर्ने सबै काम गर्ने गरी जिम्मेवारी प्राज्ञ परिषद्को बैठकबाट तोकिएको र संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मन्त्रालयबाट अधिकार प्रत्यायोजनसम्बन्धी पत्रसमेत प्राप्त भइसकेको बेहोरा सम्बद्ध सबैमा जानकारी गराउँदछौं । प्रज्ञा-प्रतिष्ठानलाई विगतमा जस्तै यहाँहरूबाट अनवरत सहयोग, सद्भाव र शुभेच्छा प्राप्त भइरहने अपेक्षासहित बिदा हुन्छौं । धन्यवाद !

कलाजगत्

## कृष्ण मन्दिरसामुको पुरानो घर

राजेश मानन्धर



# संग्रावार

## चर्चासहित कविगोष्ठी

**काठमाडौं ।** साहित्य सन्ध्याका अध्यक्ष राम विनयको अध्यक्षता, संस्कृतिविद् प्रा.डा. कृष्णबहादुर थापा, रामबहादुर पहाडी, डा. नारायणप्रसाद चौलागाई, गायत्रीकुमार चापागाई, स्नेह सायमि, वासुदेव अधिकारी, विन्दु अधिकारी ढकाल, उपप्रा. ज्ञानु विद्रोही, बैरागी जेठाको आतिथ्य, उपाध्यक्ष रमेश पोखरेलको सञ्चालनमा सम्पन्न ४३२ आँ विशेष शृङ्खलामा प्रमुख अतिथिले 'दर्दै', यसको सांस्कृतिक महत्त्व र रूपान्तरणको आवश्यकता' विषयमा चर्चा गर्नुका साथै पञ्चकुमारी परियार, मुकुन्द न्यौपाने, ओमप्रसाद कोइराला, डम्भर पहाडी, खेमराज निरौला, विन्दु अधिकारी ढकाल, रेशि रिमाल, कात्यायन, कुमार नेपाल, सविता ढुङ्गाना दाहाल, प्रशान्त खरेल, गङ्गा कर्मचार्य पौडेल, डा. विनोद ढकाल, शिवप्रसाद आचार्य, गोपालकुमार मैनालीलगायतले रचना वाचन गरे ।

## अविरल जनसाहित्य यात्रा-७२

**काठमाडौं ।** राष्ट्रिय जनसाहित्यिक सङ्घ, नेपालका अध्यक्ष राम विनयको अध्यक्षता, नेता अमृतकुमार बोहराको प्रमुख आतिथ्य, प्रा.डा. जीवेन्द्रदेव गिरीको विशिष्ट आतिथ्य, राष्ट्रिय जनसांस्कृतिक महासङ्घका अध्यक्ष प्रेमनाथ अधिकारी र पूर्व मन्त्री तथा साहित्यकार शान्ता मानवीको विशेष आतिथ्य, प्रलेसका महासचिव डा. देवी दुलाल क्षेत्री, युद्धप्रसाद मिश्र स्मृति प्रतिष्ठानका अध्यक्ष डा. फणीन्द्रराज निरौला, डा. गोविन्दप्रसाद आचार्य, सहप्रा. खेमराज निरौला, नेपाल निजामती कर्मचारी सङ्गठनकी सचिव दीपा रनपहेली, प्राज्ञ नन्दु उप्रेती, प्रा.डा. कुलराज निरौला, रेजिना आँपगाई, यशोदा अधिकारी, जङ्ग पहाडी, रिजु शर्माको आतिथ्य, डा. हरिप्रसाद सिलवालको स्त्री परिचय र महासचिव प्रकाश सिलवालको सञ्चालनमा सम्पन्न ७२ आँ शृङ्खलामा प्रगतिवादी कवि डम्भर पहाडीका एक दर्जन कविता गुन्जिए ।

प्रस्तुति : रमेश पोखरेल

## आख्यान वाचन कार्यक्रम

**काठमाडौं ।** सुरभि साहित्य प्रतिष्ठानका अध्यक्ष बाजुराम पौडेलको सभापतित्व, डा. विदुर चालिसेको प्रमुख आतिथ्य, संरक्षक युवराज मैनाली र श्रीहरि फुर्यालको विशिष्ट आतिथ्य, कोषाध्यक्ष रामकुमार पण्डित क्षेत्रीको स्वागत मन्त्रव्य र सचिव अच्युत घिमिरेको सञ्चालनमा सम्पन्न १४१ आँ आख्यान वाचन कार्यक्रममा महेशकुमार वाग्लै, विश्व कुइक्केल, रञ्जु खनाल, रामचन्द्र खतिवडा, अच्युत चालिसे, गोविन्द सङ्गत महर्जन, रामचन्द्र दाहाललगायतले कथा, लघुकथा वाचन गरे ।

## 'सन्धो छ कि रोदन' सार्वजनिक

**काठमाडौं ।** २०७५ सालमा शिला खनालको स्वरमा 'मधुमासमै मिठो साथ छुटेपछि रोँ' बोलको पहिलो गीत रेकर्ड गराएका श्रीराम राईको मनमा बिराईको स्वर र ओमप्रकाश राईको सङ्गीतमा 'सन्धो छ कि रोदन' बोलको दोस्रो गीतको अडियो औसन म्युजिक नेपालको युट्युब च्यानलबाट सार्वजनिक गरियो । बालकथा, लघुकथा, हाइकु, मुक्तक, गजल, कविता लेखनमा सक्रिय राईका बालकथासङ्ग्रहहरू 'टोली नेता' (२०७४) र 'पोलेको मकै' (२०७८) प्रकाशित छन् । रावासावा प्राज्ञिक समाज नेपालका सदस्य राई लघुकथा समाज नेपालको खोटाडका अध्यक्ष हुन् ।

## डेड्गीबाट बच्ने उपायहरू

- ◆ बिहान, दिउँसो तथा साँझको समयमा लामखुट्टेको टोकाइबाट डेड्गी लाग्न सकछ ।
- ◆ लामखुट्टेबाट बच्न पुरै शरीर ढाक्ने लुगा लगाउँ ।
- ◆ घर, कार्यस्थल र सार्वजनिक स्थानमा पानी जम्न नदिअँ ।
- ◆ पानी राखेको भाँडालाई छोपेर राख्नै ।
- ◆ दिउँसो पनि लामखुट्टे भगाउने धूप बालौं र लामखुट्टेको टोकाइबाट बच्ने मलम लगाउँ ।
- ◆ घरभित्र लामखुट्टे छिर्न नसक्ने गरी भ्यालढोकामा जाली वा सुत्ने बेलामा भुल लगाएर सुताँ ।
- ◆ अँध्यारा कुनाकाञ्चामा कीटनाशक औषधी छर्क्ने गराँ ।
- ◆ कस्तीमा हप्तामा एकपटक एयरकुलर, पानी ट्याङ्की, फूलदानी, गमलामा राखिएका प्लेटहरू राम्ररी सफा गराँ ।



नेपाल सरकार  
विज्ञापन बोर्ड

## विशिष्ट र आजीवन सदस्यताका लागि अनुरोध

'शब्दाङ्कुर' २०५८ सालदेखि हालसम्म एक अङ्क पनि नटुटाई मासिक रूपमा निरन्तर प्रकाशित हुँदै आएको छ । वर्तमान परिवेशमा यसलाई स्थायित्व प्रदान गरी स्तरीकृत गर्नुपर्ने आवश्यकता महसुस गरिएको छ । यसका लागि यहाँहरूसमक्ष विशिष्ट र आजीवन सदस्यताको प्रस्ताव गरिएको छ । विशिष्ट र आजीवन सदस्यतामार्फत प्राप्त रकमलाई अक्षय कोषका रूपमा राखी उत्पादनमूलक कार्यमा लगानी गरिने छ । लगानीबाट प्राप्त रकम शब्दाङ्कुरको स्तरवृद्धि एवम् स्थायित्व प्रदान गर्ने कार्यमा खर्च गरिने छ । यसका लागि यस मासिकको नाममा प्रभु बैड्क लिमिटेड (Prabhu Bank Limited) मा Account Name : SABDANKUR SAHITYPRADHA MASIK र Account Number : ००१०००३०५६००००११ को खाता खोलिएको छ । नेपाल, भारत अथवा विदेशको कुनै पनि ठाउँबाट प्रभु बैड्क लिमिटेडको उक्त Account Name र Account Number मा रकम जम्मा गरी यस पत्रिकाको विशिष्ट र आजीवन सदस्य बनेर योगदान गर्न सक्नुहुन्छ । विशिष्ट र आजीवन सदस्यता फारम हामीबाट इमेलमार्फत प्राप्त गर्न सक्नुहुन्छ । हुलाकमार्फत पत्रिका उपलब्ध गराइने भएकोले कृपया पत्राचार गर्ने ठेगाना प्रस्त लेख्न र ठेगाना परिवर्तन भएमा तत्काल जुनसुकै माध्यमबाट खबर गर्नुहुन अनुरोध छ । समयमा पत्रिका प्राप्त नभएको जानकारी जुनसुकै माध्यमबाट प्राप्त भएमा पुनः पठाइने प्रतिबद्धता समेत व्यक्त गर्दछौं । नेपाली भाषा, साहित्य, कला र संस्कृतिको श्रीवृद्धिमा तपाईंले प्रदान गर्नुभएको अमूल्य योगदानका लागि हार्दिक धन्यवाद ।

विशिष्ट सदस्यता शुल्क : नेपाल (नेरु) र भारतमा (भारु) १०,०००/-

संस्थागत र अन्य मुलुक नेरु २०,०००/-

आजीवन सदस्यता शुल्क : नेपाल (नेरु) र भारतमा (भारु) ५,०००/-

संस्थागत अन्य मुलुकमा रु १०,०००/-